

कई बार जाकर भी हडबडी मे मुझे देख न सके । बस, पिता माता दोनों शोक मे पागल हो कर का-हुओं का दूआँकड़ कर रो उठे । रोने की आवाज सुन कर सभी अडोसी-पडोसी भी का-हुओं का-हुओं करते वहाँ दौड पडे । इस रोने-चीखने से अजीब कोलाहल हुआ । मरी नींद टूट गई । दौडता हुआ वहाँ जा पहुँचा । मुझे पाकर मेरी दीदी और बाबू की जो आनन्द हुआ, वह कहा नहीं जा सकता । वे प्रेम से मेरी देह चाटने लगे । तब से वे कभी भी मुझे अकेले छोड कर बाहर न जाते । मैं अपन माँ-बाप का ऐसा प्यारा था ।

मैं अपनी माँ के दुलार और पिता के प्यार में दिन दिन दूज के चाँद की तरह बढ़ने लगा । एक दिन, दो दिन, तीन दिन योंही वो मास बीते । मैं इधर-उधर उछल कूद करने लगा । माँ ने देखा, नहीं लिखने-पढ़ने से लड़का बहैद हो जायगा । अतएव रात में जब

बाल-मनोरजन-माला—२.

सियार पाँडे



लेखक

श्रीरामचंद्र शर्मा वेनीपुरी



प्रकाशक

हिन्दी-पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय



मूल्य १०१

प्रथम संस्करण सं० १९८२.

सुद्रक

गणपति कृष्ण गुर्जर, धील्दमीनारायण प्रेस, काशी ।

१९२५

निवेदन



लड़कों का स्वभाव खिलवाड़ी होता है। व पढ़ने का नाम सुनते ही भाग खड़े होते हैं। अतएव, लड़कों को पढ़ने लिखने की ओर रुचि दिलाने के लिये अवतक दो उपाय काम में लाये जाते हैं। उनमें एक है हमारे गुरुओं की पद्धति-अर्थात् ठाक पीट कर हकीम बनाना और दूसरी है वैज्ञानिक पद्धति, कि लड़कों को हँसाते खेलाते ही पढ़ा देना।

‘बाल-मनोरजन माला’ इसी दूसरी पद्धति पर ध्यान रखते हुए निर्माण की जा रही है। हम इस माला में वैसी ही पुस्तक* गंथना चाहते हैं जिन्हें देखते ही लड़के छप्पी से लगा लें, माँ बाप के मना करने पर भी दिन रात ऐसी पुस्तकों को पढ़ते रहें-पढ़ें और हँस भी। साथ ही साथ इसी हँसी-खेल में उन्हें उचित उपदेश भी मिलें, जिससे उनका भाविय उज्ज्वल हो।

यह कार्य बहुत ही कठिन और व्यय साध्य है। एक तो बाल-साहित्य का निर्माण सभी लेखक कर नहीं सकते। दूसरे उस साहित्य में मनोरजकता भरना तो और भी कठिन होता

* छपी पुस्तकों के नाम टाइटिल की मार्जिन पर देखिये।

है। फिर पुस्तक लिखे जाने पर भा उसमें अच्छी छपाई और सुन्दर सुन्दर चित्र देने में बहुत कुछ खर्च करने पड़ते हैं। इतना कुछ होने पर भी हमने इस प्रकार की एक माला निकालना प्रारम्भ किया है और उसे सुलभ मूल्य में देने का हम विचार रखते हैं। आशा है, बालकों के शुभ चित्तक हमें इस कार्य में यथेष्ट मदद देंगे।

अंगरेजी में इस प्रकार की Juvenile Readers यथेष्ट सख्या में हैं। और भाषाओं को तो जाने दाजिये। बिहार से सटे हुए बंगाल प्रदेश में—बंग भाषा में इस प्रकार की अनेकों पुस्तकें हैं। किन्तु राष्ट्र भाषा हिन्दी में इस प्रकार की पुस्तकों का एकदम अभाव सा है। क्या हम हिन्दी प्रेमियों के लिये यह लज्जा का बात नहीं है ?

‘हिन्दी-पुस्तक-भण्डार’ ऐसा पुस्तकों के प्रकाशन का विचार बहुत दिनों से कर रहा था किन्तु कई कारण-वश, जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है, वह अवसर अपनी इच्छा को कार्य रूप में परिणत नहीं कर सका था। किन्तु अब वह अपना उपहार लेकर हिन्दी प्रेमियों के सम्मुख खड़ा है। प्रत्येक हिन्दी प्रेमी बाल हितैषी सज्जन का यह कर्तव्य है कि उसके इस उपहार को स्वागत करें, उसे प्रोत्साहन दें तथा इस विषय में अपना सत्परामर्श देने में भी न चूकें।

समर्पण

प्रिय अनुज,

तुम्हारा नामकरण भी नहीं हुआ था कि तुम चल बसे। इस समय तुम बड़े हो स्वर्ग के देव-बालकों के साथ खेलते-कूदते तथा पढ़ते लिखते होगे।

यह पुस्तक चालको के मनोरजन के लिये लिखी गई है, अतएव यह तुम्हें समर्पित है।

आशा है इसे स्वीकार कर अपने विदग्ध बन्धु को सात्वना दोगे।

रामवृक्ष

सियार पॉडे



धर्यो लडको ! मेरो कहानो सुनोगे ?

॥ श्री. ॥

सियार पाँडे



हुआँ हुआँ हुआँ, हुआँ हुआँ हुआँ

वाह ! तुम हँस क्यों पडे ? बोलो, प्यारे
बच्चा ! बोलो, तुम हँस क्यों पडे ? मेरी
बोली सुनकर तुम्हें हँसी क्यों आ गई ?
मैं भी तो तुम्हारी बोली प्रतिदिन सुनता हूँ,
किन्तु कभी नहीं हँसता । कभी तुम रोते रोते
अपना गला बसाकर विचित्र आवाज बना
लेते हो । सिसरुते सिसरुते हिचकी पर हिचकी
लेने लगते हो । कभी हँसते हँसते अपने घर को
गुँजा देते हो । कभी चिल्ला चिल्ला कर लोगों
के कान की मल्लो फाड़ने लगते हो । किन्तु

सियार पाँडे

मैं इन्हें सुनकर कभी भी नहीं हँसता । फिर तुम्हारे हँसने का कारण ?

हुआँ हुआँ हुआँ, हुआँ हुआँ हुआँ

फिर वही हँसी । मुफ्त के दाँत ठहरे—
ही ही करके निकाल दिये । निकट का मुँह
ठहरा—ठठाकर हँस पड़े । बाहरे हँसने वाले !
क्या दूसरे को दाँत और मुँह नहीं है ? खैर !
हँसो—खूब हँसो । किन्तु दूसरे पर हँसने के
पहले जरा अपनी ओर भी देख लिया करो ।
दूसरे की आँख की फूली देखने के पहले अपनी
कानी आँग को भी निहार लो । मेरी बोली
सुनकर आज तुम हँसने चले हो । किन्तु अपनी
माँ से तो पूछो ! जब तुम्हारा जन्म हुआ था
तो तुम क्या बोलते थे—केहाँ केहाँ केहाँ । कहो
तुम केहाँ केहाँ केहाँ करते थे कि नहीं । और
यह केहाँ केहाँ बोलना भी पहले पहल तुम्हें
सिखाया किसने ? अजी—इसी सियार पाँडे
ने । जब तुम्हारा जन्म हुआ, तुम न बोल सकते

सियार पोंडे

ये न हँस सकते थे । मैं तुम्हारे घर के पिछ-
वाड़े जाकर चिल्लाया—हुआँ हुआँ हुआँ ।
सुनते ही घर से तुम चिल्ला उठे—केहाँ केहाँ
केहाँ । तुम्हारा गला तब तक साफ न हुआ
था । इसीलिये साफ साफ हुआँ हुआँ नहीं कर
सके, केहाँ केहाँ चिल्लाये । यों, देखो तो मैं
तुम्हारा पहला गुरु हूँ । इसीलिए तो तुम
मुझे पोंडे जी कहते हो । अब तुम समझे ? मैं
तुम्हारा गुरु हूँ । मुझे प्रणाम करो । हँसा
मत—प्रणाम करो, प्रणाम ।

हाँ, तो अब यह तो बताओ, कि तुम चल
हो किधर ? अपने गुरुजी की पाठशाला को
छोड़कर अपने पुराने और पहले गुरु जी मुक्त
सियार पोंडे के पास आये हो किस काम से ?
क्या कहा—मेरी जीवनी सुनना चाहते हो ?
मेरी जीवनी ? बाहरे मैं । किन्तु मैं अपने
मुख से अपनी जीवनी कैसे सुनाऊँ ? तुम
कहोगे, पोंडेजी अपने मुख से अपनी बड़ा,

सियार पाँडे

कर रहे हैं। मैं ठहरा पाँडेजी ! इस छोटी सी जिन्दगी में ही कितनी चालाकियाँ खेली, कितने को छकाया, कितने को चल्छू बनाया, कितनी बार विपत्ति में फँसे और साफ कत्ती काटकर निकल आये। इस छोटे से शरीर से ही बड़े बड़े गजराज और मृगराज को भी नांको चने चवाये—उन्हें बद्धू बनाया। अपनी बुद्धिमानी, चालाकी, धूर्तता और समय की सूझ के ही कारण मैं धूर्ताधिराज, चातुर्यवातार, विद्या-बुद्धि निधान, सकल गुणदान श्रीमान् पंडितप्रवर श्री शृगाल पाण्डेय छेवर दी प्रेट के नाम से प्रसिद्ध हूँ। नाम के पीछे की पूँछ काशी की पंडित-सभा की ओर से जोड़ी गई है। और, आगे की सांग सरकारी युनिवर्सिटी से मिली है। हिन्दी-साहित्य सम्मेलन भी एक बढ़िया सपाधि देने का विचार कर रहा है। समझे ?

फिर वही रट ! जीवनी सुनाइये, जीवनी

सियार पाँदे

सुनाइये । मैं अपनी जीवनी क्या सुनाऊँ ? वह तो ससार में प्रसिद्ध है । सस्कृत के हितोदेश और पचतत्र देशों, अँगरेजी के इसाप्स फेबुल और इन्डियन फेबुल देखो—सभी में मेरी अफथ कहानियाँ भरी पड़ी हैं । सरकार भी मेरी कहानियों से बहुत खुश है । लड़कों की कितान में ज़रतक मेरी दो-एक कहानियाँ नहीं पढ़ती—वह अधूरी समझा जाती है । किन्तु तुम्हारा हठ तो दृढ़ है नहीं—बिना कहानी सुने मानोगे नहीं । खैर, मैं बुढ़ा भी हो चला इसलिये अब इस दुनिया से कूच करने के पहले अपनी जीवन-कहानी तुम्हें सुनाऊँगा—सभी प्रकट और गुप्त कहानियाँ तुमसे कहूँगा । और, आज कल यह रीति भी चल पड़ी है कि बड़े लोग अपनी जीवनी—आत्म-चरित—स्वयं लिख छोड़ते हैं । मैं भी तो बड़ा आदमी ठहरा—अतः मैं ही क्यों चूकूँ ? तो सुनो । किन्तु देखते रहना कहीं से कुत्ता न आजाय । क्योंकि तुम जानते ही हो

सियार पाँदे

कि दुनिया में वह मेरा सब से बड़ा शत्रु है ।

तुम्हारी गाछी के पीछे जो वह बड़ा खटोर है वहीं मेरा जन्म हुआ । मैं अपने माँ-बाप का पहला और इकलौता लडका था । अतएव मेरे आदर-सम्मान का क्या पूछना ? वे मुझे अपनी आँखों की पुतली सा संयोग रखते । एक पल भी वे मुझे अपने से दूर न करते । जरा भी मुझे अपनी आँखों से दूर होने पर वे क्या क्या न कर बैठते इसका कोई ठिकाना नहीं । एक दिन की बात है । सुनकर तुम खूब हँसोगे । दीदी और बाबू दोनों किसी काम से बाहर चले गये थे । मैं औधी के मारे अपनी सोंध के एक एकान्त स्थान में जाकर सो रहा । दूतने में वे आ पहुँचे । सोंध में मुझे न देख कर पागल हो गये । इस जगल में देखा, उस जगल में देखा । इस सोंध में ढूँढा उस सोंध में ढूँढा । किन्तु मेरा कहीं पता नहीं । कम्बळी की मार । मैं जिस सोंध में सो रहा था, वहीं

कई बार जाकर भी हडबडी में मुझे देख न सके। वस, पिता-माता दोनों शोक में पागल हो कर का-हुओं का-हुओं कह कर रो उठे। रोने की आवाज सुन कर सभी अडोसी-पडोसी भी का-हुओं का हुओं करते वहाँ बौड़ पड़े। इस रोने-चीखने से अजीब कोलाहल हुआ। मरी नींद टूट गई। बौड़ता हुआ वहाँ जा पहुँचा। मुझे पाकर मेरी खीदी और बाबू को जो आनन्द हुआ, वह कहा नहीं जा सकता। वे प्रेम से मेरी देह चाटने लगे। तब से वे कभी भी मुझे अकेले छोड़ कर बाहर न जाते। मैं अपने माँ बाप का ऐसा प्यारा था।

मैं अपनी माँ के दुलार और पिता के प्यार में दिन दिन दूज के चाँद की तरह बढ़ने लगा। एक दिन, दो दिन, तीन दिन योंही दो मास बीते। मैं इधर-उधर तछल कूद करने लगा। माँ ने देखा, नहीं लिखने-पढ़ने से लडका बड़े हो जायगा। अतएव रात में जब

सियार पाँडे

पिताजी अपनी जजमनिका से लौटे तो मों ने कहा—या हुआ हुआ हा अर्थात् वच्चे के हाथ में भट्ठा पडना चाहिये । पिताने कहा—हा' हा. अर्थात् हा हा । वस, पिताजी ने अपना पत्रा खोला । मेष, वृष, मिथुन, कर्कट आदि गिनते गिनते आगामी बृहस्पतिवार को पढाई शुरू करने का दिन ठीक किया । मैं यह सुन कर खूब खुश हुआ, बाह । अब मैं अन्य साथियों के साथ उस नदी किनारे के स्कूल में जाऊँगा, पढ़ूँगा, गेंद खेलूँगा । वच्चे । तुम जजमनिका, पत्रा, स्कूल आदि के नाम सुन कर हँसो मत । क्योंकि तुम जानते ही हो कि हम सियार पाँडे ठहरे । बिना पढे-लिखे हमारा काम चल नहीं सकता । मेरे पिताजी सब शास्त्रों के जानकार थे । नदी के किनारे का वह बड़ा जंगल उन्हीं की जजमनिका में था । अब पिता के मरने के बाद मैं ही वहाँ का पुरोहित हूँ । समझे ?

बृहस्पति का सन्ध्या को मुझे साथ लेकर

पिताजी नदी किनारे के स्कूल में पहुँचे । राह में आगे पिताजी चलते थे पीछे माताजी और बीच में मैं । रास्ते भर वे दोनों चिंता से चारों ओर देखते थे कि कहीं कोई दुष्ट मुझ पर धावा न कर दे । स्कूल में मेरी पढ़ाई का श्री-गणेश देखने की मेरे बहुत से जाति-भाई इकट्ठे हुए थे । मेरी उमर के भी बहुत से लड़के थे । वे भट्ठा पकड़ चुके थे । उनमें से कोई कहता डर क्या है ? कोई कहता—कुछ भी नहीं । एक कहता—यही जरा गुदगुदी लगेगी । दूसरा कहता—हाँ कुट कुट करके कुछ काटने का मालूम पड़ेगा । मैं अवाक् था । इतने ही में मैं एक बिल के निकट बैठाया गया । पिताजी ने मेरी पूँछ को उसी बिल में धुसेब दिया । माता बोली—देखना देह मत हिलाना । मैं बुझू ऐसा बैठा रहा । कुछ ही देर में मेरी पूँछ में कुछ कुट-कुट कर काटने लगा । ओफ ! कैसा पीड़ा ! मैं भट्ट छल पड़ा । पीछे फिर कर

सियार पाँदे

देखता हूँ कि कई छोटे छोटे केकड़े मेरी पूँछ में लटक रहे हैं। पिता-माता सन्तुष्ट हुए। सभी पहली बार ही मेरी यह सफलता देख बोल उठे—जीयेगा तो लड़का बड़ा आदमी होगा।

मेरो पढाई का यही श्रीगणेश था, यही भट्टा पकड़ना था। वहाँ से सभी घर आये। जितने आत्मीय कुटुम्ब आये थे सभी को भोज दिया गया। वह भोज कितने धूम-धड़ाके से हुआ था, उसका वर्णन मैं कहाँ तक करूँ, बालक बालिकाओ।

तुम स्कूल में पढ़ते हो, तुम्हारे भाई कालेज में। मेरा स्कूल वही नदी का किनारा था। मैं अब वहाँ नित्य जाता और नई नई विद्या सीखता। अब मैं अपना भोजन आप उपार्जन कर लेता। घोंघों-केकड़ों से होते होते बकरियों के छोटे-छोटे बच्चों पर हाथ फेरने लगा। बाबू और दीदी जब मेरे इन कार्यों को

सियार पॉके

देखते तो कहते—बाह ! लडका पढ़-लिख कर पूरा पढ़ित हो गया । अब इसे कपड़े-लत्ते या पाने-पीने में कोई कष्ट न होगा । बच्चा जीयेगा तो एक रोटी सुख से कमा खायगा ।

एक दिन की बात याद आती है । याद आते ही हँसी भी आ जाती है और अपनी चतुरता पर धमक भी हो आता है । क्यों नहीं, वह काम ही ऐसा था ।

सन्ध्या का समय था । मैं पिताजी के साथ अपनी जजमनिका में निकला । जाते जाते एक बाघ के घर के निकट पहुँचा । वहाँ बाघ का बच्चा खेल रहा था । बाह ! कितना मोटा ताजा है । कैसा गुल-धुल शरीर है । उसका मौँस कितना नरम, कितना स्वादिष्ट होगा । मैंने पिताजी से कहा—मैं बाघ का बच्चा खाऊँगा । पिताजी बोले—क्योंरे बेवकूफ । कहीं कोई ऐसा भी सोचता है । सियार-भीदड़ होकर बाघ का बच्चा खाने की साध करना । चुप रह !

सियार पाँदे

बाघ सुनेगा, तो अभी मुझे और तुझे दोनों को चट कर जायगा । किन्तु मैं कब मानने वाला । रोने लगा । पिता ने देखा, यह न मानेगा । तब मुझे वहीं एक झाड़ी में रखकर राम नाम जपते आगे बढे । बाघ इनकी देह की गंध से ही पहचान गया । बाघ-बाघिन दोनों गुर्रा कर पिताजी पर झपटे । पिताजी अपना पैर सिर पर रखकर भागे । वह दोनों इनके पीछे पडे । मुझे एक युक्ति सूझी । बाघ-बाघिन दोनों पिताजी को पकडने चले थे । यहाँ उनका बचा अकेला था । मैं झटपट बाघ की माँद में चला गया । और, उसके बच्चे की गर्दन पकडे यह ले वह ले दौडता-छल्लता अपनी सोध में हाजिर हुआ । मैं बाघ के बच्चे को देखते ही डर गई । मैंने उससे सब कहानी कही । उसने मेरी पीठ ठोक दी । तब तक बाघूजी भी पहुँच गये थे । उन्होंने मुझे छाती से लगा लिया । माता पिता दोनों कहने लगे—ओह ! लड़का

सियार पोंडे

रड़ा होनहार है। जिस काम को बड़े-बूढ़े पोंडे भी नहीं कर सकते, वह इसने बात की बात में कर डाला। पिताजी ने यह घटना इसके पिता से कहा, उसके पिता से कहा। माताजी यह घटना उसकी माँ से कह आई, इसकी माँ से कह आई। समूचे गाँव में मेरी बुद्धिमानों का दिठोरा पिट गया। सभी कहते—लड़के ने कमाल किया।

लड़को। जिस तरह तुम लोग में एक राजा होता है, वसी प्रकार हम लोगों में भी होता है। जब हमारे राजा को यह खबरमिला, तो नन्तकी खुशी का कोई ठिकाना न रहा। एक सियार के छोकड़े ने एक बाघ के बच्चे को मार रखा, यह क्या हमारी जाति के लिये कस अभिमान की बात थी ? राजा साहब मेरे घर पर आये। मुझे देखा—मेरी बढी बड़ाई की। नन्हे एक लड़की थी। मेरी शादी उस लड़की से करने की बात मेरे पिता से कही। पिताजी

सियार पाँदे

ऐसा मौका कब छोड़ने वाले थे ? शादी की बात पक्की हो गई ।

तुम जानते ही हो कि दिन में धूप चगी रहने पर, जब वर्षा होती है तभी हम लोगों का व्याह होता है । जहाँ धूप चगी रहने पर वर्षा हुई कि तुम लोग आँगन में नाचने गाने लगते हो और चिछाने लगते हो कि गीदरा-गीदरी की शादी होती है । बात ठीक है—हमारा वही लगन है । इसीलिये मेरी शादी बहुत दिनों तक रुकी रही । जब अकस्मात् एक दिन ऐसा हुआ तो मेरी शादी हुई । शादी की रात में, मेरे विवाह के उपलक्ष्य में, जैसी धूम-धाम, नाच-गाना, बाजा और रोशनी आदि हुए उत-का वर्णन करना कठिन है । मेरे गाँव के एक लडके ने—निस्सदेह वह मेरी जाति का है—एक कविता लिखी थी । उसे पढ़ कर कुछ अन्दाज लगा सकते हो ।

सिंघार पॉके

अधिक मछली ठूस ठूस कर खा जेने के कारण गर्मी से उस दिन घरवाली को नींद नहीं आई थी। प्यास लगने पर वह भानस घर के ओसारे की घलथरी पर पानी ठारने आई। घर से यह चटचट आवाज आती देख वह सहमी। जाकर देखती है तो घर का फाटक खुला हुआ है—आज जलदी में वह घर का फाटक बन्द करना भूल गई थी। उसने झट फाटक बन्द कर दिया। क्रोध में आकर अपने घरवाले को चठाया। झटपट चिराग जलाया। एक मुस्तएड बँढा लिये घरवाला दरवाजे पर आ धमका। उसके बगल में घरवाली दीया लिये खड़ी थी। पिताजी अपनी मृत्यु निकट देख पुकी मार के रो पड़े—थूढ़े का कोमल कलेजा ठहरा। उनका रोना क्या था, मृत्यु को खुद न्योता देकर बुलाना था। घरवाली ने समझा था कि कुत्ता है। गीदड़ की आवाज सुनते ही घरवाला क्रोध में कॉप पड़ा।

सियार पाँके

तब तक पिताजी की सुरीली आवाज सुन कर कुछ कुत्ते भी वहाँ इकट्ठे हो गये—तुम जानते ही हो कि पाजो कुत्ते हमारी जाति के कट्टर दुश्मन हैं। बालको! आगे मैं अपने श्रीमुख से अपने पिताजी की दुर्गति कैसे वर्णन करूँ? हाँ, जब दूसरे दिन मैं उनकी तलाश में निकला तो गाँव के गोयरे में उनके लहू-लुहान मृतक शरीर को पाया। आह! उनके शरीर को दुष्टों ने किस घेरहमी से नोचा-पीटा था।

घर पर जब यह समाचार लेकर मैं पहुँचा तो किस तरह रोना-कन्ना मचा, वह वर्णन करना कठिन है। हुआँ हुआँ-हा हा की ध्वनि से समूचा सड़ौर और जंगल गूँज गया। पीछे मैंने उनका श्राद्ध शास्त्रानुकूल किया। भोज-भात का क्या पूछना? इसका कुछ दिन के बाद माताजी भी स्वर्गलोक सिधारीं। पिताजी के शोक में उन्हें खाना-पीना सब छोड़ दिया था। इन घटनाओं को देख मैंने हाथ में कुश

सियार पोंडे

और जल लेकर शपथ ग्वाई कि आज से कभी भी गाँव में न जाऊँगा। तुम देखोगे कि तब से मैं गाँव में हाला-हाली कभी नहीं जाता। बात साफ तो यों है कि जब वो एक बार मैंने अपनी प्रतिज्ञा, अत्यन्त आवश्यकता पहुँच जाने पर, तोड़ी भी तो उसका नतीजा अच्छा नहीं हुआ। होता भी कैसे, कसम खाकर फिर वही काम करना क्या कम पाप है ?

माता पिता के मरने पर घर गिरस्ती का बोझ हमारे सिर पर पड़ा। जब तक वे जीते थे मैं पूरा नवाब बना रहता था—मेरी स्त्री भी अपने को रानी से एक पाई कम न समझती। किन्तु अब ? अब तो—

भूल गया राग रग भूल गई छकड़ी ।

तीन चीजें याद रहीं नोन तेळ ककड़ी ॥

मेरी सारी नवाबी भूल गई। भोजन पान कपड़ा-लत्ता सब का इन्तजाम मुझे खर्च करना पड़ता। पिताजी खूब होशियार थे, इसलिये

सिंघार पाँदे

उनके जीवन भर कोई दुर्घटना न घटी । किन्तु मुझे दुनिया का कुछ अनुभव नहीं था, इस लिये उनके मरने के थोड़े ही दिन बाद एक काराड खडा हो गया । मैं जिस खंढौर में रहता था, उसी के निकट एक गाछी थी । उस गाछी में एक बन्दर रहता था । बन्दर का एक छोटा-सा बच्चा था । एक दिन वह बच्चा उसे न मिला । बन्दर बन्दरी दोनों घबराये । इस गाछ पर खोजा उस गाछ पर खोजा, इस मुरमुट में देखा उस मुरमुट में देखा । बच्चे का कहीं पता न चला । गाछ की ऊँची डाली पर चढ़कर किचिर-मिचिर करके जोर से पुकारा, किन्तु बच्चे की आवाज कहीं से न आई । अन्त में उन दोनों ने निश्चय किया कि हो न हो मैं ही उनके बच्चे को खा गया हूँ । सुनते हैं, बन्दरी ने मुझे उस बच्चे के पीछे पीछे घूमते हुए देखा भी था । यही नहीं, शायद मेरी सोंध के निकट उस बच्चे को पूछ की हड्डी भी पाई गई थी ।

सियार परीं

भगवान् जानें, बात कहीं तक सत्य है ? मैं मछलो खाता नहीं, मांस खाता नहीं । जिस दिन वसका उचा गायत्र हुआ था उस दिन मैं एकादशी किये हुए था—जल भी पीता बन्द था । राम राम ! मैं उस दिन क्या उस वस्त्र को खा सकता था ? सरामर मूठी घाव । किन्तु बन्दर को यह सब सोचने विचारने का दिमाग कहीं से आया ? वह तो निगड़ पड़ा कि हो न हो तुम्हीं ने मेरे बच्चे को मार खाया है, और मैं भी तुम्हारे बच्चे को मार कर इसका बदला लूँगा । उस दिन से मैं सावधान हो गया । अपने बच्चे को कभी भी अकेले बाहर न जाने देता । न जाने वह उपद्रवी बन्दर क्या कर सुजरे ?

जब बन्दर ने देखा कि इसका वस्त्र हाथ न आयेगा तो उसने एक दूसरी चाल चली । एक दिन वह रात-काल अपने घर-से निकला और नदी किनारे के उस बड़े जंगल में

सिंथार पौंदे

पहुँचा । वहाँ एक बाघ रहता था । बन्दर ने उसक घर की किवाड़ खटखटाई । बाघ सोया हुआ था । अपनी नींद में बाधा पडते देख कर वह गरमाया हुआ बाहर निकला । ज्यों ही उसने किवाड़ खोला कि बन्दर ने आगे बढ के कहा—‘प्रणाम मामाजी ।’ बेवकूफ बाघ इस प्रणाम पर फूल कर कुप्पा हो गया । बडे प्रेम से उसे आशीर्वाद दिया । दोनों तरफ से कुशल-त्तम पूछे जाने के बाद वे दोनों भीतर घर में गये ।

घर में एक पल्लंग पर बाघ खुद बैठा और बन्दर के लिये एक कुरसी रखदी । बन्दर भी शान से कुरसी पर डट गया । पीछे बाघ ने पूछा—‘कहो भगिना, किधर चले हो ? देखो, आज पाँच-सात दिन लगातार मेघ बरस रहा है । तुम्हारा खाना पीना कैसे चल रहा है ?’ बन्दर ने कहा—‘मेघ बरसे या पत्थर, मुझे क्या ? मैं तो गाछ पर रहता हूँ, गाछ का

फल-पत्ता खाता हूँ । रुहिये मामाजी, आप का भोजन पान कैसे चलता है ?' बाप ने कहा—
 'भगिना, कुछ न पूछो, आज पाँच सात दिन से पेट में एक दाना अन्न न पड़ा है । पेट भूख के मारे कुनकुल कर रहा है । भूखे पेट दिन-रात सो तर जिताता हूँ । इस वर्षा में कहाँ जाऊँ, क्या खाऊँ ? अच्छा भगिना, तुम तो गाछ पर रहते हो, कबो तुम्हारे आस-पास कोई अच्छा शिकार है ?' बन्दर तो यह चाहता ही था । गट्ट जोल चठा—'हे क्यों नहीं ? मामा, आपके चलने भर की देरी है । मेरे घर के निकट ही एक मियार की सोंघ है । वहाँ दो प्राणी सियार रहते हैं । आह मामा, उसका बच्चा इतना मोटा ताजा और गुलधुल है कि उसके देखते ही तुम्हारे मुँह से नार त निकले तो मुझे अपना भगिना न कहना । ओफ ! तुम व्यर्थ इतने दिनों तक चपवास करते रहे । कम से कम मुझे तो इसकी खबर

सियार पाँडे

दे देनो थी ।' बन्दर की बात सुनते ही बाघ का जो चटपटा घठा । किन्तु फिर कुछ सोच कर उसने कहा—'भगिना, तुमने बतलाया तो ठीक किन्तु मुझे कुछ शक है । तुम सियार को शायद न पहचानते हो, किन्तु मैं खूब पहचानता हूँ । बहुत दिनों की बात है कि मुझे एक लड़का हुआ था । हाय ! वह लड़का कैसा अच्छा था । किन्तु एक दिन एक सियार आया । मैं उसकी ओर लपटा—इतने ही में लौट कर देखता हूँ कि मेरा बच्चा गायब । पीछे मालूम हुआ कि जब मैं उस सियार के पीछे दौड़ा उसके अन्दर अन्दर ही दूसरा सियार आकर उस बच्चे का ले भागा और मार खाया । भगिना, सियार की जाति बड़ी धूर्त होती है, मैं उसके निकट नहीं जाऊँगा । भूखों रहना अच्छा, किन्तु सियार के निकट जाना अच्छा नहीं । जीऊँगा तो कितने शिकार मिलेंगे ।'' किन्तु बन्दर भी बड़ा बतबनवा ठहरा । खूब

पुट पट्टी देकर चमे आखिर चलने को तैयार हो कर लिया ।

मैं घर से बाहर निकला तो देखा कि आगे आगे बन्दर और पीछे पीछे बाघ चला आ रहा है । मैं सच रहस्य समझ गया कि यह बन्दर की शैतानी है । किन्तु बच्चे को आज ही मजा चलाऊंगा । मैं भट्ट अपने घर में घुस गया और पेंडाइन से सन डाल कहा । फिर अपने बच्चे के पान ऐंठने लगा । वह एकबारगी केहों केहों केहों धिला उठा । मैंने जोर से कहा—‘राक्षस क्या कहीं का । भर दिन खाव खाव करता रहता है । जैसी मा वैसा बेटा । कल ही तो तुमने दो बाघ और तुम्हारी मा ने तीन बाघ खाये । तो भी तुम्हारा पेट भरा नहीं । बाधा, यह पेट है कि खन्दक ।’ मेरी बातें सुनते ही एक पैर दो पैर करके बाघ पीछे हटने लगा । उसने बन्दर से कहा—‘सुनते हो भगिना । कल ही ये पाँच बाघ खा चुके हैं



सात बाघ लाने के लिये ले गया चैमाना ।
लाया केवल पर गध ऐसा तू बेइमाना ॥

अपनी पूँछ बन्दर की पूँछ से बाँध दी । फिर दोनों आगे बढ़े । मैंने देखा, खूब उल्लू फँसा है । क्यों ही वे दोनों परस्पर पूँछ बाँधे मेरी सोंध के निकट आये कि मैं तमक के बाहर निकला और कहा— क्यों रं

सात बाघ छाने के लिये ले गया ब्रामाणा ।

छाया केवल एक बाघ, ऐसा तू बेईमाना ॥

लाओ अभी छ बाघ और नहीं तो तुम्हें भी खा जाऊँगा । बेईमान कहीं का—फेर दे मेरा बेअना ।' इतना सुनते ही बाघ सिर पर पैर देकर भागा । यह ले वह ले आँखों से ओझल हुआ । बन्दर की पूँछ बाघ की पूँछ से घँधी हुई थी । बाघ के भागते ही वह उसके पीछे पीछे घिसटाने लगा । जब बाघ उछलता तो वह झुंझ गिरता, उधर गिरता । चँ चँ करते हुए थोड़ी ही देर में उसके प्राण परेरु उड़ गये । कहो बच्चो । जो दूसरेको बुराई करना चाहता है, उसकी दुर्गति इसी तरह होती है कि नहीं ?

सियार पाँडे

इसके साथ ही साथ मेरी बुद्धि की भी तारीफ करो कि किस प्रकार इस भयानक आफत को मैंने दूसरे के सिर टाला ।

कुछ दिनों के बाद मेरी स्त्री ने दो बच्चे एक साथ ही जन्मे । अब मेरा परिवार फैल गया । इस दो प्राणी, और तीन बच्चे—कुल पाँच हुए । मुझे अकंले ही अब पाँच आदमी का खाना-पाना जुटाना पड़ता । मैं बड़े ही सोच में पड़ा । बकरी या भेड़ के बच्चे से अब काम चल नहीं सकता था । क्या किया जाय ? लड़कों को खिलाना जरूरी था । कई दिन तो ऐसा हुआ कि जो कुछ मिला, बच्चों को खिला दिया गया और हम दोनों -पाँडे पँदाइन-को चुपचाप उपवास में ही रात काटनी पड़ी । अतएव मैं इस धुन में लगा कि किसी बड़े मुल्ले को फँसाना चाहिये । यों उपवास करने से कितने दिन चलेंगे ? मेरे सौभाग्य से उस जगल में ही एक बड़ा हाथी रहता था । लड़को ! उस हाथी

के बड़े बड़े दाँत और मोटी लम्बी सूँड़ का वर्णन मैं क्या करूँ। तुमने बहुत से हाथी देखे होंगे। लेकिन मैं सिर की कसम खाकर कह सकता हूँ कि उतना विशाल हाथी तुमने नहीं देखा होगा। मैंने सोचा कि अगर इस हाथी को किसी तरह फँसाया जाय, तो बहुत काम चले। महीनों की कौन सी बात, बरसों तक खूब छक के खाया जाय। किन्तु यह फँसेगा कैसे ? उसके बड़े बड़े दाँतों के दर से बड़े बड़े बाघ-सिंह की हिम्मत नहीं होती कि उसके निकट जाँय। फिर मुझ ऐसे क्षुद्र जीव की कौन सी बात ?

किन्तु मैं जितना भी छोटा जानवर क्यों न होऊँ, बुद्धि में तो सबों से बढकर हूँ। चालाकी में मेरे जोड़ का ससार में कोई नहीं। लडको, माफ करना। तुम मनुष्य लोग मले ही रेल-तार, अट सट जो चाहो बना लो और अपनी बुद्धि पर धमक करो। किन्तु घूर्त्तता और

सियार पॉंड़े

चालकी में मनुष्यों की भी पहुँच मुक्त ऐसी नहीं है। हाँ, अगर कुछकुछ मेरा मुकाबला कर सकता है तो कौवा। बस चिड़ियों में कौवा और पशुओं में सियार—ये ही दो ससार में सब से अधिक धूर्त हैं। समझे ?

मैं एक दिन भोर ही उठा। अपने पत्रा को खूब उलट-पुलट कर एक अच्छी यात्रा ठीक की। उस यात्रा के ठीक समय पर मैं अपने घर से निकला। जाकर देखता हूँ तो हाथी सेमल के एक बड़ी डाल को तोड़े उधका पत्ता प्रेम से खारहा है। मैंने जाते ही उसे—हे वन के राजा। मैं तुम्हे प्रणाम करता हूँ—इतना कह खूब झुक कर प्रणाम किया। 'वन के राजा' सम्बोधन सुनते ही हाथी अभिमान में फूल उठा। उसने कहा—'कहिये पॉंड़े जी महाराज, आप चले किधर ? कुशल तो है ?' मैंने सिर झुका कर और हाथ जोड़ कर कहा—'महाराज ! आपकी दया से सब प्रकार कुशल है।'

एक बहुत ही आवश्यक काम से महाराज के निकट आया हूँ।' हाथी ने कहा—'कौनसा काम, कहिये कहिये। आपको कोई दिक् तो नहीं करता। बताइये, अभी मैं उसकी पूरी राय रख लूँ।' मैंने कहा—'महाराज जय तरु आपकी सेवा है, तब तक मुझे कौन दिक् कर सकता है? किन्तु महाराज! अपने पर कुछ कष्ट होने पर भी श्रीमान् के दुःख से दुःखी प्रसन्न हूँ।' हाथी घबड़ा कर बोला—'पाँडेजी! मुझे कौनसा दुःख है? देखिये, मैं आनन्द से जंगल में विहरता हूँ, जो मन भाता है खाता हूँ, अभी मेरे डर से चूँ तक नहीं करते।' मैंने कहा—'महाराज! आपकी अखण्ड प्रभुता देखकर ही तो मुझे दुःख होता है।' हाथी ने कहा—'सो क्यों?' मैंने उत्तर दिया—'सो क्यों? महाराज! देखिये आपका शरीर कैसा सुन्दर है, कितना विशाल है। सूँड़ की वनावट कैसी अच्छी है मानो वह का धम्म लटक रहा हो। दाँत कैसे उजले

सियार पाँदे

और चमकीले हैं—मानो चाँदी पर हीरे जड़े हों। बड़े बड़े सुन्दर कान सदा आपको पंखे झलते हैं। मैं कहों तक कहूँ, आपका सारा शरीर ही ऐसा सुन्दर है कि कोई भी देखते ही कह सकता है कि पशुओं के राजा यही हैं। इतना होने पर भी आप पशुओं के राजा नहीं समझे जाते और वह छोटा-सा सिंह राजा बन बैठा है। राम राम। उसका मुँह कैसा भयावना है, समूची देह बड़े बड़े भेड़ों के ढँपी हुई, कमर इतनी पतली कि अगर कोई एक धौल जोर से जमादे तो टूट जाय। आप ही कहिये कि क्या वह राजा होने के योग्य है ?

हाथी ने कहा—‘सो तो ठीक है पाँडे जी, किंतु अपना वश क्या है ?’ मैंने कहा—‘वश क्यों नहीं है महाराज। कल मैंने जंगल के सभी पशुओं को इकट्ठा किया था। एक बड़ी सभा की। मैंने लोगों को सारी बातें समझाई। मैंने आपको पूरी प्रशंसा की—‘ओह। कैसा विशाल

जानवर, कैसा सुन्दर, कैसा सीधा सादा, कैसा निरीह-न किसीको मारे न पीटे, आप लोग हाथी को ही नन का राजा बनाइये-इस दुष्ट हत्यारे सिंह को राजगद्दी से हटाइये।' मेरी बात सुनकर सभी तैयार हो गये। अभी अभी महाराज उस झील के उस पार सभी पशु फिर एकत्र हैं। वे चाहते हैं कि आप वहाँ चलें और सभी के सामने आपका अभिप्रेक हो, आपको राजा बनाया जाय। मैं इसीलिये इस समय महाराज के पास आया हूँ। देखिये, मैंने पत्रा देखा है। कुल एक घड़ी समय बाकी है। इसके अन्दर ही आपका अभिप्रेक हो जाना चाहिये। नहीं तो फिर वर्ष दिन तक ऐसा मुहूर्त न आयेगा। इसलिये, चलिये महाराज, देर न कीजिये। वहाँ पशु सब भी अकुलाते होंगे। महाराज, यह मौका न सोइये।'।

उल्लू हाथी बातों में आ गया। खाना-पीना छोड़ कर वह मेरे पीछे दौड़ा। मैं आगे

सियार पॉड़े

आगे छल्लोंग भरता बढ़ता गया। जंगल के बीच में एक मील थी। मील का पानी तो सूख गया था, किन्तु खूब कीचड़ भरी थी। मैं इसी कीचड़ में हजरत को अटकाना चाहता था। अतएव, ज्यों ही उसके निकट पहुँचा त्योंही हाथी से कहा—‘महाराज, बहुत देर हो गई है। इस मील को घूम कर पार करने से अभिपेक्ष का समय टल जायगा। इसलिये बड़ी अच्छी बात होती अगर श्रीमान् इसी रास्ते होकर सीधे चले चलते। पानी भी तो नहीं है।’ हाथी तो राजा बनने की धुन में अधा बना था। भट्ट तैयार हो गया। मैं छोटा जोव ठहरा। उस कीचड़मयी मील में बखूबी चलने लगा। किन्तु कुछ ही दूर चलने पर हाथी के पैर फँसने लगे। वह बोला—‘पॉड़े जी। देखिये पैर फँस रहे हैं।’ मैंने कहा—‘महाराज। जल्दी कीजिये। बात करने का समय नहीं है—बढ़ते आइये।’ कूँथ-कूँथ कर वह कई कदम

और आगे बढ़ा । फिर बोला—‘पॉडे जो, जरा देखिये तो । अब तो चला नहीं जाता ।’ मैंने कहा—‘वाह साहब, क्या बिना मेहनत के ही राजा हो जाइयेंगा । कुछ कष्ट तो करना ही होगा । हिम्मत न हारिये—पैर बढाइये ।’ किन्तु अब पैर क्या खाक बढ़े ? वह जितनी ही कोशिश कर पैर छत्राडना चाहता, उतना ही उसके पैर धँसते और फँसत जाते । जब अपना कोई वश चलते नहीं देखा तो आखिर में वह अधीर होकर बोला—‘पॉडे जी, अब पैर तो नहीं छूटते । कृपा कर मुझे बचाइये । मैंने हिम्मत हार दी ।’ मैंने जब देखा कि अब यह बल्लू ठीक से फँस गया तो म्लिङ्क कर कहा—मूर्ख ! आज तुमने मुझे भी बेवकूफ बनाया । यहाँ सब लोग इकट्ठे हुए तुम्हारी राह जोहते होंगे । भला, वे मुझको क्या कहते होंगे ? यदि ऐसी बात थी, तो तुमने मुझ से पहले ही कह लिया होता । मील के किनारे ही किनारे

सियार पाँदे

जाते। खैर, अब अपनी बेवकूफी का फल चखो। मैं चला।' मैं आगे बढ़ा। हाथी पुर्का मार कर रोने लगा। गिड़गिड़ा कर बोला—'पाँडे जी। मैं राजा बनने से बाज आया। मुझे बचाइये। दुहाई पाँडे जी की।' किन्तु पाँडे जी को क्या पड़ो थी उसको बचाने से? कहाँ लोग इकट्ठे थे और कहाँ राजा बनाना था? यह सब झूठमूठ का जाल रचकर तो मैं उसे फँसाना चाहता था। अथ जाल में धकेल दिए शिकार को कौन शिकारी छोड़ता है? और यदि मैं चाहता भी, तो उस पहाड़ ऐसे जानवर को क्या मैं ऊपर कर सकता था? तुम्हीं कहो, प्यारे बालको, तुम्हीं इन्साफ करो। अन्त में मैंने बिगड़ कर कहा—'जा मूर्ख इसीमे सड़ा कर। क्या इसी अकिल पर तू राजा बनने चला था? बेवकूफ कहाँ का—

छोटे से सियार पाँडे का तुमने भेद न जागा।

जगल का राजा फिर कैसे बनता अरे अजाना ॥'

इतना कह कर मैं वहाँ से चल पड़ा । हाथी पुकार पुकार कर रो रहा था, किन्तु मैंने कुछ भी ध्यान न दिया । जब कुछ दिनों के बाद आया तो देखा कि हाथी मरा हुआ है । पहले खुद मन भर मॉस खाया । पीछे अपने जाल-बन्चे को बुला लाया । उन लोगों के भी ठूसठूस कर खा लेने पर बहुत-सा मॉस अपने घर में जुगता कर रख दिया । पीछे देखा कि अधिक दिन रहने पर और मॉस सड़ जायगा । इसलिये अपने जाति भाई को न्यौता देकर एक बड़ा-सा भोज किया । भोज कई दिनों तक चला । उस धूमधाम का वर्णन मैं तुमसे क्या करूँ । गिरा अनयन नयन बिलु बानी । ॥

किन्तु 'अति सर्वत्र वर्जयेत् । जो दूसरों को ठगता है, वह आप भी कभी जरूर ठगाया जाएगा । यह अटल नियम है । मैं भी इसनियम से अलग नहीं हूँ । यद्यपि बात खोल देने पर

सियार पाँडे

मेरी शिकायत ही होगी, किन्तु मैं छिपाना नहीं चाहता। जब अपनी जीवनी सुनाने हा बैठे हूँ तो खोल खोल कर सभी बातें कहूँगा। तुम देखोगे कि यद्यपि मैं भी कई जगह छक चुका हूँ तथापि छकाये जाने पर भी, हार जाने पर भी, मैं न बर्बाद चालाकी से उस हार को भी जीत में बदल लिया। क्यों न हो? मुक्त ऐसा धूर्त ससार में है कौन? बाहरे मैं!

तो सुनो। तुम्हारे गाँव में अभिलाख पाँडे नामके एक आदमी रहते थे। यद्यपि वे दो पैर वाले आदमी ही थे, किन्तु नाम का प्रभाव भी तो कुछ होता ही है। पाँडे होने के कारण वे भी कुछ कम धूर्त नहीं थे। उस पोखरे के बगल में उनका एक खेत था। खेत में मकई थी। जब मकई के बाल में दाने पड़ गये, तो मैं वहाँ जाने-आने लगा। मैं बखूबी जानता था कि पाँडेजी लँगड़े हैं। वे मचान पर से मत्थी उतर न सकेंगे। इसलिये मैं निडर हो

कर रात में जाता और पटापट मकई का बाल तोड़ कर खूब खाता। थोड़ा खाता, अधिक नुकसान करता। पॉडिजी सचान पर से हा-हा हू-हू करते, बाँस की तुरही बजाते, कटर पीटते, किन्तु मैं कन टलने वाला। मैं तो जानता था कि पॉडिजी का यह सब कुछ ठोंग ही ठोंग है। न वे उतर सकेंगे और न हमारा कुछ बिगाड़ कर सकेंगे। फिर मैं डरूँ क्यों ?

एक रात चौदनी खिली हुई थी। टहाटही ईजोरिया थी। मैं पॉडिजी के खेत में पहुँचा। एक एक कर बाल तोड़ने और खाने लगा। किन्तु पॉडिजी एकवार भी नहीं चिह्नाये। मैंने समझा, बेचारा चिह्नाते चिह्नाते थक गया है। फिर क्या था, खून घूम घूम कर लगा गुलछर्रे उड़ाने। जब घूमते घूमते एक जगह पहुँचा तो देखा कि एक छोटे से कुड में पानी भरा है और उसमें मछलियाँ बुलबुल कर

सियार पाँदे

रही हैं । उस चाँदनी रात में ऊपर आने पर
उनके शरीर की चकमकाहट मेरी आँखों को
चकाचाँध में डाल देती । ओह ! मेरा मन
लुसफुसाने लगा—मुँह में पानो भर आया ।
इन्हे खाना चाहिये । किन्तु किस प्रकार ? उस
कुड का मुँह कुछ छोटा था—पाँछे पता चला
कि एक घैला गाढ़ा गया था और उसी में
मछलियाँ थी । सैर, घैले का मुँह तँग था और
मछलियाँ खाना भी जरूर था । पहले मैंने
अपनी पूँछ उसमें घुसेड दी । किन्तु ये केकडे
थोड़े ही थी, जो उसे पकड लेती । हार वाग
के पूँछ रौंच ली । अब सिर को ही किसी
कदर उसमें ठूसने की सोची । एक भरतवा,
दो भरतवा, तीसरे भरतवा जोर करते ही सिर
नीचे चला गया । मैं खूब खुश हुआ । दो-एक
मछलियाँ जो मुँह के नीचे आईं, उन्हें प्रेम से
चखा भी । किन्तु यह क्या ? कुछ ही देर में दम
घुटने लगा, साँस फूलने लगी । मालूम होता

था, आँधा कर प्राण अभी निकल जायेंगे । मैंने अपना सिर ऊपर खींचा । किन्तु यह क्या ? वह ऊपर आता ही न था । कोशिश की, फिर कोशिश की । किन्तु जराटससे मस नहीं । मैं घबड़ाया । लगातार कोशिश करने लगा । सारा शरीर पसीने से लथपथ हो गया । पैर की नोक-खसोट से उस जगह कितने गड्ढे हो गये । जब किसी उपाय से छुटकारा होते न देखा तो अपनी मृत्यु को निकट जान एक बारगी पुकी मार के रोने लगा—हुआँ हुआँ हुआँ हा हा हा । अर्थात् हाय हाय मैं बंसीत मर रहा हूँ । मेरे रोने की आवाज सुनते ही पाँडे चिल्ला उठा—हुले हुले हुले । पाँडे की आवाज सुनते ही गाँव से कुछ लडके कुत्तों को लेकर हल्ला करते हुए दौड़े । लडकों का हल्ला और कुत्तों का भौंभ भौंभ निकट-निकटतम आने लगा । मैं समझ गया कि यह सब कुछ इस खसोट पाँडे की कार्रवाई है—आज दुष्ट ने मुझे

सियार पाँडे

वेमौकें मारा। अतएव एक बार अन्तिम कोशिश करने की ठानी। अपने मृत माता पिता का ध्यान किया। अपने पाथा-पत्रा का भी स्मरण किया। फिर राम का नाम लेकर खून जोर से सिर ऊपर करने की कोशिश की। ईश्वर का कृपा। उस घैले का कनखा फूट गया और कनखा सहित मेरा सिर ऊपर चला आया। तब तक लड़कों और कुत्तों का कोलाहल भी अत्यन्त निकट आ पहुँचा था। मैं उस कनखे को गरदन में लटकाये सधलते-रूदते भाग चला। जब तक कुत्ते उस घैले के निकट पहुँचें भी न होंगे, तब तक मैं अपनी सोंध में दाखिल हो गया।

तैर, किसी कदर मैं बच तो आया किन्तु वह घैले का कनखा अभी तक मेरी गरदन में लटक रहा था। जब दूसरे दिन मैं बाहर निकला तो मेरे गाँव के सभी जाति-भाई पूछने लगे कि पाँडेजी आपकी गरदन में यह क्या है ?

लड़क तो और भी पाजी होते हैं। वे और भी पूछ पूछ कर दिक करने लगे। मैं भी ठहरा एक तम्बर का काइयाँ। तमक कर कहा—

जो मन देकर पढ़ता है।

तगमा उसको मिलता है ॥

सो, भाई देखो कल मैं उस गाँव की आर टहलने गया था। वहाँ पढितों की एक बड़ी सभा बैठी थी। जब मैं वहाँ पहुँचा तो पढितों ने मुझे बहुत सम्मान के साथ निमन्त्रण दिया और मुझे उस सभा में बुला कर लेगये। वहाँ मेरी विद्या को देरा कर वे लोग खुश होगय और चलते समय मुझे यह तगमा दिया। चूँकि यह तगमा कुछ जलदी में तैयार किया गया था इसीलिये इसको चारो ओर कुछ चमड़-खावड़ रह गया है। उन लोगों ने कहा—
‘पोंदेजा आपकी विद्या देख कर हम लोग बहुत खुश हुए। पहले से आपके आने को कुछ स्वर न थी, इसीलिये तगमा नहीं तैयार

सियार पॉंढे

किया गया था । अब जलदी में जैसा कुछ भला-बुरा बन सका है उसे आप धारण कीजिये । जो कुछ इसमें ऐब रह गया है वह जब आप एक दिन आइयेगा तो दुरुस्त कर दिया जायगा । अब आपही लोग कहिये मैं उनके आम्रह को कैसे टालता ।’

सभी मेरी बातों में आगये । मेरी विद्या-बुद्धि की लोगों में धाक सी बँध गई । सभी कहते—देखो भाई, पॉंढे ने बड़ा नाम किया । देखो उसे पंडितों ने भी तगमा दिया है । क्या तगमा पाना आसान काम है और क्या सभी पा सकते हैं ? पॉंढे ने कमाल किया । उस दिन से जब मैं घरसे निकलता सभी मुझे तगमा पॉंढे तगमा पॉंढे पुकारते । यों कुछ ही दिनों में लडके, जवान, बूढ़े सभी मुझे तगमा पॉंढे कहने लगे । देखो लडके । इसीको धूर्तता कहते हैं । द्वार को जीत बना लेना यही कहलाता है, समझे ?

शायद तुमको मालूम नहीं कि मैं चरमा पहनता हूँ । तुम कहोगे—‘पोंडेजी आपको चरमा कहाँ से आया ।’ सुनो बच्चे । उसकी भी एक कहानी है । ✓

जात यो है, कि जब उस दिन वह बाघ भागा और उसकी पूँछ से बँधा हुआ बन्दर घसीटाते घसीटाते मर गया, तब मैंने सोचा कि जंगल में रहकर बाघ से घैर कितने दिनों तक निवहूँगा । इसलिये मैंने उससे दोस्ती करने की सोची । एक दिन उसके घर गया । अपने घर के बाहर ही बाघ बाघिन दोनों प्राणी बैठे थे । मुझे देखते ही वह डरके मारे अपने घरमें घुस गया और किवाड़ लगा दी । मैं समझ गया, कि बाघ के दिल से अभी डर नहीं गया है । तैर, मैं उसके दरवाजे के निकट पहुँचा और किवाड़ी खटखटाते हुए कहा—‘मामाजी, मामाजी, आप घरमें क्यों घुस गये ? बाह, क्या भगिने को देखते ही दहेज देने के डरसे यों लुका जाना

खियार पॉटे

सचित है ? आइये बाहर—दो चार गपसप हो । देखिये, वह दुष्ट बन्दर हम दोनों मामा-भगिने को आपस में लडाना चाहता था । कहिये, किस चालाकी से मैंने उसे भरवा डाला । न आपका एक बाल बँका हुआ न मेरा और वह दुष्ट भी मारा गया । आप आइये, कुछ पान-कसैली खिलाइये । मामी को भी बुलाते आइये ।’ मेरी बात सुन कर मामा-मामी में कुछ फानाफूसी हुई । फिर किवाड़ खुली । देखता क्या हूँ कि आगे आगे मामी अपने हाथ में एक हरिन के कलेजे का मॉस लिये हुए आ रही हैं और पीछे पीछे मामा धीरे धीरे पैर उठाते चले आते हैं । [बाघ मामा को अभी तक मेरा डर लगा हुआ था । मामी ने वह मास का टुकड़ा मेरे आगे रख कर कहा—‘लो भगिना, कुछ जलखावा करो ।’ मामा-मामी को सप्रेम प्रणाम कर मैंने जलपान किया । फिर इधर-उधर की बातें कर घर लौटा ।

अब मैं बाघ के घर प्रतिदिन जाने आने लगा । वहाँ मेरी खातिरदारी रोज होती । मैं कुछ अपने खाता था, कुछ बालबच्चों के लिये भी ले आता था । मेरे दिन बड़ी मौज म कटने लगे । एक दिन जब मैं मामा के घरमें गया तो वेरता क्या हूँ कि कई चश्मे इधर-उधर पड़े हुए हैं । मामाजी, तो आदमियों पर भी हाथ साफ करने वाले थे । सो कितने चश्माधारी जैटिल-मैन भी उनके हाथ पड़ ही जाते थे । ये चश्मे उन्हीं मृत पुरुषों के थे । किन्तु मामा कभी मनुष्य के समाज में तो रहते नहीं थे, वे चश्मे का प्रयोग क्या जानने गये ? एक दिन उनको मालूम हुआ कि हो न हो यह भी खाने की कोई चीज है । बस दाँतों तले रख कर लगे कड़कड़ाने । चश्मा तो टूक टूक होगया किन्तु मामा की जीभ और मसूदे भी बुरी तरह घायल हुए । उनसे खूब लहू टपके । इसलिये मामा उन्हें उस दिन से छूते तकन थे । मैंने जब

सियार पाँदे

उन चश्मों को देखा तो तबीयत हुई कि इनमें से एक अगर मिल जाय तो आँखों में लगाऊँ। मैं मनुष्य-समाज से पूरा परिचित ठहरा—मैं चश्मे का व्यवहार क्यों न जानूँ ? मेरे गले में तगमा था ही, अब कुछ कसर थी तो एक चश्मे की। फिर पूरा पडित बनने में मुझे क्या देर।

अतएव, एक दिन जब मैं मामा के यहाँ गया तो उन चश्मों में से एक सुनहली कमानि-वाला छठाया। मुझे चश्मा छठाते देख कर मामी चिल्ला उठी—‘अरे भगिना ! देखो उसे मुँह में मत रखो, नहीं तो जीभ कट जायगी।’ मैंने कहा ‘नहीं मामी, तुम धवड़ाओ मत। मैं इसे देखता ही भर हूँ।’ उस समय अच्छी तरह देख-भाल कर रख दिया। जब चलने का अवसर हुआ तो उसे चुरा कर चम्पत हुआ। यद्यपि माँगने से भी मिल सकता था, किन्तु स्वभाव बरा घोरी ही कर ली। रौर, किसी फदर हाथ तो लगा।

अब मैं रोज चश्मा पहनने लगा । पहले तो केवल शौक से पहना था, किन्तु अब तो धीरे धीरे आँख खराब होने लगी और बिना चश्मा पहने सूझना ही नहीं था । अब मेरे लिये चश्मा पहनना आवश्यक हो गया ; देखो लडकी ! तुम कभी शौक से चश्मा न पहनो ।

एक रात मैं अपनी जजमनिका में निकला । धोखे से मेरा चश्मा घर पर ही छूट गया । बिना चश्मे के मैं अन्धा सा हो रहा था । राह भूल गई । भटकते भटकते गाँव में चला गया । वहाँ मैं अकस्मात् एक आदमी के घर में घुस गया । मैं अपनी आँखा की कसम खा सकता हूँ कि मैं किसी बुढ़ी नियत से इस घर में नहीं पैठा था । किन्तु अहीर बुझावे सो मर्द । वह घर अहीर का था । घर में जाते ही उसकी हॉड़ी ढनढनाने लगी । यहाँ फिर भी मैं एक बार शपथ खाने को तैयार हूँ कि मैंने जान-बूझ कर उसकी हॉड़ी नहीं छुई । मैं पंडि, भला

सियार पाँडे

अहीर की हाँडी की कोई चीज मैं कैसे खाता ?
जान बूझ कर मैं किस प्रकार अजात बनता ?
हाँडी की ठनठनाहट सुनते ही अहीर अपना
खानपानी लट्टू लेकर दरवाजे पर आधमका ।
घर से दोया जल रहा था । मुझे देखते ही
फट दरवाजा बन्द कर दिया । मैंने समझा
कि बस पिताजी की मौत ही मुझे भी मरना
होगा । इधर-उधर देखा । वह घर टट्टी का
था । एक ओर टट्टी में थोडासा छेद था । मैंने
उस छेद को अपनी मुक्ति का मार्ग समझ कर
कोशिश करनी शुरू की । उस छेद में अपना
मुँह घुसेड कर बाहर निकलने की चेष्टा करने
लगा । मेरा सौभाग्य । दो चार बार जोर
करते ही समूचा शरीर घर से बाहर डो
गया किन्तु पूँछ उसी ओर थी । मालूम हुआ
पीछे से कोई पूँछ पकड़े हुए है । एक बार
हिम्मत लगाकर आगे जोर किया । किन्तु यह
क्या ? बेईमान अहीर ने छुरी से कच्चे मेरी

पूछ काट ही ली । अपनी पूछ का सफाया देख कर जैसी आन्तरिक पीडा मुझे हुई, वह अवर्णनीय है । किन्तु उस समय तो जान पर ही आफत आ गई थी । 'अर्द्ध तजहि बुध सर्वस जाता ।' मैं अपनी पूछ की माया-ममता छोड़ कर बेतहाशा भाग चला । आगे आगे मैं दौड़ता, पीछे पीछे लहू का फव्वारा छूटता जाता ।

सकुशल घर पहुँच जाने पर मेरे मन में बहुत कष्ट होने लगा । मैं सोचने लगा कि पूछ तो कट गई । जब भोर ही में चढ़ूँगा तो लोग क्या कहेंगे ? भलेही बड़-बूढ़ों को समझा दूँ, किन्तु बदमाश वशे तो मानेंगे नहीं । वे कल ही स "पूछकट्टा" "पूछकट्टा" कह कर चिढान लेंगे । अतएव, ज्यों ही भोर हुआ कि मैं नदी के किनारे के उस ववूल के पेड में नीचे लिखा विज्ञापन लटका दिया—

सियार पोंढ

“भवसि देखिये देखन जोगू ।”

“सभी सियारों को सूचित किया जाता है कि आज रात में आठ बजे, पन्द्रह मिनट, पैतालिस सेकेण्ड पर सभी सियारों की एक विशाल महासभा उस मुर्दघटिये के ऊँचे टीले पर होगी। सियार जाति की उन्नति कैसे हो, इस विषय पर विशद विचार होगा। सभी सियार भाइयों से प्रार्थना है कि उक्त अवसर पर पधारने की कृपा करे।

—श्री तगमा पाँडे ।

निश्चित समय पर सभी सियार इकट्ठे हुए । मैंने सभापति की हैसियत से व्याख्यान दिया—
प्यारे सियार भाइयों ! आज आप लोगों को इस स्थान पर इकट्ठे देख कर मैं फूला नहीं समाता । हमारी जाति एकता की बहुत पक्षपाती है । जब हममें से एक भी बोलता है तो सभी उसके साथ बोलते हैं । यह एकता का शुभ लक्षण है । एक के रोने से सभी रोते

सियार पौड़े



पूछ करे सियार पौड़े सभा कर रहे हैं ।

हैं—एक के हँसने से सभी हँसते हैं। चाहिये भी यही। किन्तु ऐसी एकता होने पर भी हम लोग नीच क्यों समझे जाते हैं, इसी विषय पर विचार करना है।

आप लोग मनुष्य को जानते होंगे। वह छोटासा जीव होकर भी हाथी, घोड़ा, ऊँट, बाघ, सिंह सभी पर शासन करता है। क्यों? बुद्धि के बल से। हम लोगों में भी तो बहुत बुद्धि है। हमारी बुद्धिमानी और चतुरता के सामने मनुष्य भी सिर मुकाता है। तभी तो वह हमें 'पॉइंजी' कहता है। जैसे कान, आँख, मुँह आदि उसको हैं, वैसे हमारे भी। उसको भी दो हाथ, दो पैर हैं, हमें भी दो हाथ और दो पैर हैं। बचपन में वह भी हमारे ही ऐसा चार पैरों पर चलता है—उस समय अपने दो हाथों से भी वह पैर ही का काम लेता है। किन्तु जब बड़ा होता है, तो हाथ से हाथ का काम लेता है और पैर से चलता है। हम लोग भी

चियार पॉइ

चाहे तो ऐसा कर सकते हैं। यों सभी घातों में समानता है, यदि भेद है तो सिर्फ पूँछ में। हमें पूँछ है—उसे नहीं। इसी एक पूँछ के कारण ही हम उससे नीचे समझे जाते हैं। शायद आप लोगों को मालूम नहीं कि मनुष्य को भी पहले पूँछ थी और वह भी चार पैरों पर चलता था। किन्तु उसने एक सभा की और सब आदमियों ने मिलकर अपनी अपनी पूँछ काट डाली और उसी दिन से दो पैर से चलने लगे। मैं भी चाहता हूँ कि आज आप लोग आइये, अपनी अपनी पूँछ यहीं काट डाली जाय।

देखिये, पूँछ रहने से बड़ी हानि भी है। यह फजूल हमारे पीछे पड़ी रहती है। जब कभी हमारे दुश्मनों से मुकाबला करने का अवसर आता है, यह हमें खूब धोखा देती है। आपने देखा होगा कि जब कुत्ता हम लोगों के पीछे पड़ता है तो उसका पहला वार इसी

पूछ पर होता है । जब तक हम लोग अपना शरीर अपनी मोध में डुकावें डुकावें तब तक वह दुष्ट, पूछ पकड़ लेता है । तब जो इस पूछ के कारण हमारी दुर्गति होती है, उसे आप जानते ही हैं । मनुष्यों की दुरी नजर भी इसी पूछ पर गड़ी रहती है । इसलिये मेरी राय है कि इस ससुरी पूछ को काट डालिये । देखिये कल उस गाँव में फिर पड़ितों की सभा हुई थी । मुझे भी न्यौता मिला था । जब मैं वहाँ गया तो पड़ितों ने कहा कि 'पॉडेजी, आप लोग हमलोगों से कम किस बात में हैं ? कुछ भेद है तो इसी पूछ का । पूछ काट डालिये और मनुष्यों में मिल जाइये ।' मैंने देखा उनकी बात सादे सोलइ आने ठीक है । देखिये, मैंने फौरन उनके यहाँ ही पूछ कटा डाली । अब मैं मनुष्य बन गया हूँ । आइये, आप भी पूछ कटा कर मनुष्य बन जाइये ।"

मेरी इस लम्बी वक्तृता को सुनकर सभी

सियार पाँडे

सियार बड़े ही खुश हुए । वे खुशी के मारे अपनी पूछ चट-पट करके पृथ्वी में पीटने लगे । चलो ! तुम लोग सभा में ताली बजाते हो । हमारा हाथ तो यही पूछ है । फिर हम उसे क्यों न पीटें । ✓

खैर, मेरी बात सभी को मजूर हो गई । सभी सियार कहने लगे कि 'तगमा पाँडे ने जो कुछ कहा है वह बहुत ठीक है । हमें अपनी पूछ अवश्य काट डालनी चाहिये । यह फजूल है ।' इस प्रकार बातचीत चल ही रही थी कि एक बूढ़ा सियार खड़ा हुआ और आँखें मटका मटका कर कहने लगा—

“भाइयो ! तगमा पाँडे ने जो कुछ कहा है वह सही और दुरुस्त है । किन्तु हमें एक बात पूछनी है । क्या मनुष्यों को अपनी पूछ कटा डालने का शौक नहीं है ? क्या वे पुनः पूछ लगाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं ? देखिये उनमें से कितने अपने नामके आगे—पीछे लम्बी

लम्बी पूछ जाद रहे हैं । नाम ही में नहीं, शरीर में भी वह पूछ लटकाने की कांशिश कर रहे हैं । कोई सिर के पीछे शिगा के रूप में पूछ लटका रहा है तो कोई सिर के आगे दाढ़ी के रूप में । कुछ नवयुवक तो अपने कपाल पर भी लम्बा लम्बी पूछ रख रहे हैं । कपड़े-लत्ते में भी पूछ लगा रखी है । कोई गरदन में नेकवाई लटकाते हैं तो कोई गुल्मन्द । कितने की धोती के पछुए की एक छूट सदा पीछे लटकती हुई पूछ सी भूलती रहती है । अथ आप ही बताइये कि जब मनुष्य भी अपना कोई हुई पूछ के लिये ऐसी कोशिश कर रहे हैं तो हमें अपनी लगी हुई पूछ काट डालना, कहाँ तक उचित है । इसके अतिरिक्त एक बात और भी मेरे मन में उठ रही है । निस्सदेह तगमा पाँडे किसी दुष्ट के पाले पड़ कर अपनी पूछ गवाँ बैठे हैं । जब तक उनकी पूछ कायम थी, तब तक तो उन्होंने इस बात

की जिक्र भी न की थी। अब, जब अपनी पूछ गायब हो गई है तो हम लोगों को भी पुट-पट्टी देकर पूछ कटवाने पर लगे हुए हैं। जो अन्धा होता है वह चाहता है कि ससार ही अन्धा हो जाय—यही हालत तगमा पाँडे की है।

बूढ़े की बात सभी के हृदय में बैठ गई। सभी जोर जोर से पूछ पटकते और कहने लगे कि 'बूढ़े बाबा का कहना ठीक है—पाँडे धूर्त है, बेईमान है।' कोई कोई नवयुवक तो इतने उत्तेजित हुए कि कहने लगे 'मारो, पीटो, इसे धूर्तता का मजा चखाओ।' यों चारों ओर महान् कोलाहल मच गया। मैंने देखा, यहाँ ठहरने पर कुशल नहीं। जब तक वे शोर-गुल में फँसे थे, मैं खिसक गया।

विपत्ति अकेले नहीं आती। मैं कितने को कितनी बार छका चुका था। ऐसा शायद ही कोई जीव ही, जिसका कुछ न कुछ अनिष्ट मैंने न किया हो। मैंने जो तुमसे अपनी दो

एक कहानियाँ कही हैं, वह तो मुख्य हैं । इनके अतिरिक्त ऐसी कितनी घटनाएँ हैं जिन्हें कहने के लिये न तो मुझे समय है और न सुनने के लिये तुम्हें ही । सो, सभी जीव मुझसे असन्तुष्ट थे । अतएव वे सब मिल कर एक दिन जंगल के राजा सिंह के पास गये और मुझ पर नालिश ठोक दी ।

उन लोगों ने राजा से कहा—‘महाराज ! सियार पॉंडे बड़ा उपद्रव कर रहा है । रक्षा कीजिये । रक्षा कीजिये ॥ पॉंडे के अत्याचार से हम लोगों का रहना कठिन है । वह कभी इसे खाता है, कभी उसे खाता है । कभी इसके बच्चे को चट कर जाता है कभी उसने बच्चे को चट कर जाता है । कभी उससे चुगली खाकर इससे लडा देता है, कभी इससे चुगली खाकर उससे भिड़ा देता है । महाराज ! उसकी शोखी का भी कोई ठिकाना नहीं । जब उससे आपकी दुहाई दी जाती है तो कहता है—‘चलो

सियार पौड़े

चलो, मैं महाराज फझाराज को कुछ नहीं समझता । पौड़े के आगे महाराज को क्या चलेगी, वे ।’

अपनी शिकायत की बात सुनकर सिंह क्रोध से तलमला उठा । उसने अपने चपरासी भालु को हुक्म दिया कि जाओ पौड़े को फौरन पकड़ कर कचहरी में दाखिल करो । भालु मेरे द्वार पर आते ही चिल्ला उठा—‘तगमा पौड़े । घर से निकलो । राजा साहब तुम्हें बुला रहे हैं । आज तुम्हारी सारी शैतानी निकल जायगी ।’ मैं समझ गया कि दाल में कुछ काला अवश्य है । कहा—‘चपरासी जी । आइये बैठिये । हुक्मा तमाखु पीजिये । कहिये क्या बात है ? राजाने आज मुझपर क्यों कृपा की है ? हाँ चपरासोजी । आपने भोजन तो नहीं किया होगा । आपके लिये बढिया मधु-का छत्ता रखे हुआ हूँ ।’ मधु के छत्ते का नाम सुनते ही भालु के मुँह से लार टपकने लगी ।

उसने सारी बातें मुझसे विस्तार पूर्वक कहकर अन्त में मधु का छत्ता माँगा । निकट ही की सोध की ओर मैंने इशारा किया । उसमें विढनी का एक छत्ता था । हृदयही में भालु सोध में डुक गया और उस विढनी के छत्ते को ही मधु का छत्ता समझ कर उसपर कौर चलाया । उसका कौर चलाना था कि विढनियों उस पर टूट पड़ी । अब वह उस सोध में से चिड़लाने लगा । सोध कुछ तँग थी, घुसने को तो हुजूर घुस गये थे, किन्तु निकलना मुश्किल था । मैं खून हँसने लगा । आखिर जब उसकी बुरी गत देखी तो पीछे से उसकी पूछ पकड़ कर बड़ी कठिनाई से बाहर घसीट लाया । बाहर निकल कर जब तक वह क्रोध से मुझ पर कोई चोट करे, तब तक मैं अपनी सोध में घुम गया । विढनी की ढक से अपने मुँह और देह को फुलाये वह क्रोध में दौत पीसता हुआ चला गया ।

सियार पाँडे

महाराजा सिंह के पास जाकर उसने कहा—
'महाराज ! सधमुच पाँडे आपका हुक्म नहीं मानता । वह तो कहता है, राजा दूसरा कौन है, राजा तो मैं हूँ । देखिये महाराज, जब मैंने उसे चलने को कहा तो उसने एक बिढती के छत्ते को मेरी देह पर फेंक दिया और कहा जाओ, अपने राजा से परियाव करो ।' सुनते ही सिंह का क्रोध और बढ़ गया । उसने अपने मंत्री हुँराड़ से कहा—'क्यो मंत्रीजी । क्या उपाय होना चाहिये' । मंत्रीने कहा—'महाराज ! वह बल से बश में नहीं होगा, छल से होगा । बिल्ली को भेजता हूँ वही उसे ठग कर बुला लायेगी ।' बिल्ली मेरे दरवाजे पर आकर कइने लगी—
'अरे बहिन-पूत । अरे बहिन-पूत । जरा बाहर आरे । देखो मैं तुम्हारी मौसी यहाँ खड़ी हूँ ।' मैंने बाहर निकल कर मौसी को प्रणाम किया । कहा—'मौसी किधर चली हो ।' मौसी बोली 'बहिनपूत, मैं साधु हो गई हूँ—वृन्दावन जा

रही हूँ । किन्तु जाने के पहले एक बार राजा का दर्शन कर लेना चाहती हूँ—राजा तो ईश्वर का अवतार न ठहरा । अकेले राजा के दरबार में जाते डर लगता है, तू साथ साथ चल, बहिनपूत । तुझे छोड़ कर और कौन मेरा साथी होगा ?' मैं तो सज्ज समझ रहा था । कहा—'मौसी । तुम्हारी घात ठीक है—मैं चलेगा । किन्तु चलने के पहले तुम जरा कुछ जलपान तो करलो । देखो मौसी, उस गोलाघर में बहुत से चूहे हैं, तुम उनमें से दो—एक के साथ पानी पीलो, तब तक मैं भी कुछ खालेता हूँ।' मौसा ज्यों ही गोलाघर में गई कि वहाँ छलते हुए चूहों को देखकर छल पड़ी । संयोग की बात । चूहे तो मौसी को देखते ही रफूचकर होगये । खुद मौसी चूहेपानी पर गिर पड़ी । मौसी के पैर पड़ते ही उसकी कल दब गई और मौसी का एक पैर कट गया । मौसी छटपटाती हुई भागी । सिद्ध

सियार पाँदे

से जाकर उसने भी मेरी खूब ही शिकायत कर दी ।

तब सिंह की आज्ञा से उसके सेनापति बाघ अपनी सेना सहित मेरे द्वार पर आ धमके । बाघ को आते देखकर मैं आगे बढ़ा और झुक कर कहा—‘प्रणाम मामा जी ।’ मामा ने कहा—‘छोड़ो यह मामा भगिने का नाता । राजा की बुलाइट है, जल्दी चलो ।’ मैंने कहा—‘वाह ! जाऊँगा क्यों नहीं ? राजा के दर्शन क्या कम भाग्य से होते हैं । किन्तु मामाजी, इस कड़ी धूप में आने के कारण तुम कुछ सूखे से मालूम पड़ते हो । मेरी राय है कि तुम जरा सुस्ता लो, कुछ जल जलपान कर लो । फिर हम दोनों मामा-भगिनी चलेंगे । देखो मामा, तुम्हारे लिये मैंने एक बकरा कन्धे में बाँध रखा है ।’ एक शिकारी कल एक बकरा एक कठारे में अन्दर, बाघ को फँसाने के लिये, बाँध गया था । मैंने उसे देखाते हुए कहा देखो मामा, यह कैसा तेलगर बकरा है ?

ओफ । उसमें कैसा मजा होगा ।' बकरे को देखते ही बाध छल्लता हुआ उस ओर चला । किन्तु ज्यों ही उस कठघरे के अन्दर पैर दिया कि फाटक बन्द । बाध घबड़ाया । छल्ला कूदा, गरजा-धरसा, किन्तु कोई फन नहीं । सेनापति को कैद होते देख सारी सेना भागी ।

अब घाघ की गिरफ्तारी की बात सुन कर खुद सिंह मेरे दमन के लिये चला । ज्यों ही मैंने उसे आते देखा अपनी स्त्री और पुत्र सहित आगे बढ़कर प्रणाम किया । मेरी इस नम्रता को देखकर सिंह बहुत सन्तुष्ट हुआ । उसने मुझसे पूछा—'क्यों पोंडे, मेरे निम्न तो तुम ऐसी नम्रता दिखाते हो और मेरे कर्मचारियों को फटकार बताते हो, उन्हें कैद करते हो । यह कैसी बात है ? बोलो, इसकी सजा क्या होनी चाहिये ।' मैंने कहा—'महाराज । मैं श्रीमान् की प्रजा ठहरा । श्रीमान् जो कुछ दंड दें, वह मुझे स्वीकार है । किन्तु क्या मैं श्रीमान्

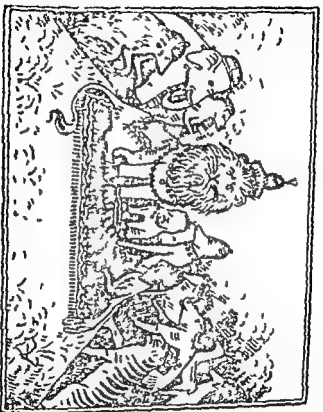
से पूछ सकता हूँ कि मैंने कौनसा अपराध किया है ? महाराज । मैं जानता हूँ कि श्रीमान मुझसे क्यों रज हैं । किन्तु जरा मेरे अपराधों पर न्यायपूर्वक विचार कीजिये , आपके चपरासी भालु, या दूती बिल्ली अथवा सेनापति बाध, ये जो आये तो आते ही इन लोगोंने मुझसे खाना माँगना प्रारम्भ किया । महाराज । तुलसी-ताम्रा हाथ में लेकर शपथ खा सकता हूँ कि इन्होंने मुझे कभी भी यह न कहा कि तुम्हे राजा बुलाते हैं । खैर, भूखके मारे आपके चपरासी जो उस सोंध में घुमे, वहाँ वे बिदनी के छत्ते को मधु का छत्ता समझ कर लपके । फल हुआ सो आप जानते ही हैं । देखिये, उस सोंध में भालु के पैर के चिन्ह हैं कि नहीं । और, यह बिल्ली आई तो मुझे बुलाने और चलगाई चूहे पकडने उस गोलाघर में । वहाँ चूहेदानी से पैर कटा आई और श्रीमान के आगे मेरी शिकायत कर दी । यह आपके सेनापति

बाध उस बकरे के लोभ में उस कठघरे में जा फसे हैं। देखिये, महाराज, वह बकरा बँधा है कि नहीं और आपके सेनापति कैद हैं कि नहीं? अब बताइय, मेरा अपराध इसमें क्या है?’

सिंह मेरा कथन सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ। कहा—‘पाँडे। तुम सचमुच निरपराध हो। ये मेरे अमले ही सब खराब हैं।’ फिर उसने कहा—‘और ये सब जंगल के जानवर तुमपर क्यों नालिश करते हैं।’ मैंने कहा—‘महाराज। उसकी बात भी साफ साफ मुझसे सुन लीजिये। इन लोगों ने एक सभा की थी जिसमें इन लोगों ने यह विचार किया था कि श्रीमान् को राजगद्दी से हटा के दूसरे किसीको राजा बनावें। महाराज। मैंने उस सभा में इस बात का विरोध किया, कि नहीं—महाराजा सिंह ऐसा दूसरा न्यायी, उदार, धर्मात्मा और बलिष्ठ राजा हो नहीं सकता। मेरी बात सुन कर वे लोग बड़

असन्तुष्ट हुए और उसी दिन से कहने लगे कि इसका बदला चुकावेगे। सो आज महाराज के निकट इन्होंने बदला चुकाने की नीयत से नालिश कर दी है। महाराज ! दया करें, उस सभा के सभापति श्रीमान् के मंत्री यही हुँराड़ जी बने हुए थे।

सभा की बात सुनते ही सिंह आपे से बाहर हो गया। मंत्री हुँराड़ उसी जगह खड़ा था। सिंह ने उसे ऐसे जोर से तौल के थप्पड़ मारा कि बेचारा वहीं सदा के लिये लोट गया। हुँराड़ को मरते देख कर सभी जगली जीव इधर-उधर भाग चले। सिंह ने दौड़ दौड़ कर उनमें से भी कई को वहीं सुला दिया। पीछे आकर मेरी पीठ पर हाथ फेरते हुए कहा—‘पाँडे जी ! तुम वन्य हो। खदमच तुम तगमा पाँडे कहलाने के योग्य हो। मैं तुमसे प्रसन्न हुआ। आज से तुम्हीं मेरे मंत्री हुए—लो यह मंत्री का मुकुट।’ ऐसा कहकर



मिथ का दवारि—परिउं जी मनी नने ।

सियार पॉटे

महाराज सिंह ने स्वयं अपने हाथों से मृतमन्त्री
हुराड़ का मुकुट मेरे सिर पर रख दिया। मैं
उसी दिन से अभी तक उस जंगल के राज्य
का मन्त्री हूँ—समझे बन्धो।

बस, अब अधिक नहीं। यद्यपि मेरी
जीवन कहानी का अन्त नहीं, तथापि अब मैं
यहाँ ही समाप्त करता हूँ। देखो। साम हो
गई। उस जंगल से मेरे जाति-भाई हुआ
हुआ करके मुझे बुला रहे हैं। तुम्हारी माँ भी
तुम्हें खिलाने के लिये खोज रही होगी। इसके
अतिरिक्त, वह देखो, मेरे जाति-भाई की आवाज
सुनते ही हमारा पुराना शत्रु वह कुत्ता इस
ओर छुटा हुआ चला आ रहा है। अतः अब
देर नहीं। लो मैं चला—

हुआ हुआ हुआ हुआ ।
किस्सा मेरा खतम हुआ ॥



इसके बाद ?

“तोता-मैना” पढ़ो ।

महिला-मनोरंजन-माला



सम्पादिका-श्रीमती चन्द्रमणि दवा ।

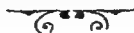
यह अब सर्व स्वीकृत सिद्धान्त हो गया है कि बिना स्त्रियों को शिक्षित किये समाज अथवा देश की उन्नति हो नहीं सकती। किन्तु स्त्रियों की शिक्षा में इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि वे पश्चिमी शिक्षा की चकाचौंध में पडकर अपना प्राचीन आदर्श न खो बैठें। हमन निम्नलिखित पुस्तकें इसी सिद्धान्त को सामने रख कर एक विदुषी महिला द्वारा तैयार कराई हैं। आप अपनी बेटी, बहिन, भ्रातृपत्नी एवं माता को इन पुस्तकों का उपहार देने में न चूकें।

१ बेटी	॥	२ बहिन	॥
३ दुलहिन	॥	४ माता	॥

शेष पुस्तक तैयार हो रही हैं।

पुस्तक भण्डार, लहेरियासराय।

चारु चरित-माला



बालकों के चरित-निर्माण में महापुरुषों की जीव-
नियों से बड़ी सहायता मिलती है—यह बात निर्वि-
वाद सिद्ध है। इसी आदर्श को सामने रखकर हमने
इस चारु चरित-माला के सकलन का भार उठाया
है। आशा है बाल-हितैषी सज्जन इस माला को अपना
कर हमारा उत्साह बढ़ायेंगे। इन पुस्तकों की छपाई-
बैधाई भी खूब ही नेत्ररजक रखी गई है। प्रत्येक पुस्तक
के टाइटिल (मुख-पृष्ठ) पर उस महापुरुष का भव्य
चित्र है, जिसका चरित पुस्तक में लिखा गया है।
इतना होने पर भी प्रत्येक पुस्तक का मूल्य केवल
चार आना रखा गया है।

इस माला की पुस्तकें—

- | | | | |
|------------------|---|---------------------|---|
| १ शिवाजी | ॥ | ४ गुरु गोविन्द सिंह | ॥ |
| २. लगट सिंह | ॥ | ५. शेर शाह | ॥ |
| ३. राणा जगमहादुर | ॥ | ६. गोखले | ॥ |

और पुस्तकें भी लिखी जा रही हैं।

पुस्तक-भण्डार, लहेरियासराय।

बालक

हिन्दी में बालकों के लिए अद्वितीय सचित्र मासिक पत्र

सम्पादक—प० रामवृक्षशर्मा बेनीपुरी

वार्षिक मूल्य ३)

नमूना 1)

प्रतिमास ४८ पृष्ठ और ३० ३२ चित्र

आज तक हिन्दा में जितने बालोपयोगी पत्र निकल चुके हैं या निकलते हैं, उनसे इसमें अनेक विशेषताएँ हैं। बँगला, मराठी, गुजराती, अंग्रेजा आदि उन्नत भाषाओं के बालोपयोगी पत्रों के सामने रखने योग्य अभी तक इसके सिवा कोई पत्र राष्ट्र भाषा हिन्दा में नहीं निकला। इसके अन्दर बालकों की ज्ञानवृद्धि और मनोरंजन के सभी प्रकार के साधन उपास्थित हैं। इसमें १६ स्थायी सचित्र शीर्षक हैं, जिनमें विविध शिक्षाप्रद सामयिक विषयों के समावेश किया गया है, जिनसे प्रति मास बालकों को भिन्न-भिन्न भौतिक की लाभदायक बातें मालूम हो जाती हैं। छपाई, सफाई, शुद्धता और सुन्दरता तथा भाषा की सरलता और विषयों के चुनाव पर इतना काफी ध्यान दिया जाता है कि इसका नियमित रूप से पढ़ने वाला बालक थोड़े दिनों में विविध उपयोगी ज्ञानों का भण्डार बन जायगा। 'विज्ञान' 'बहादुरी की बातें' 'केसर की क्यारी' 'जीवजन्तु' 'इतिहास' 'अनोखी दुनिया' 'बह कौन है?' 'बुढ़िया की कहानी' 'पंचमेल मिठाई' 'पूछताछ' 'भत्ता चगा' 'हँसी खुसी' 'कहाँ और क्या' बालक की बैठक' 'बालचर' और 'सम्पादक की शैली'—इन १६ स्थायी शीर्षकों में से पहले में नवीन

युग के चमत्कारपूर्ण आविष्कारों की चचा, दूसरे में वीर पुरुषों के अलौकिक करामातों, तीसरे में ससार के महापुरुषों के चुने हुए उपदेशपूर्ण वाक्य, चौथे में ससार के नाना प्रकार के जीवों का परिवर्तन पाँचवें में इतिहास की महत्वपूर्ण कथाएँ, छठे में ससार के अद्भुत समाचारों का सग्रह, सातवें में महापुरुषों की जीवनियाँ, आठवें में दिलचस्प कहानियाँ, नवें में पाँच उन्नत भाषाओं के प्रसिद्ध पत्रों के चुने हुए बालोपयोगी विषयों का संकलन, दसवें में बालकों के वित्त-कौतूहल उत्पन्न करने वाले मनोरंजक प्रश्नों के उत्तर, ग्यारहवें में स्वास्थ्य सम्बन्धी जानने योग्य लाभदायक बातें तथा देशी और विदेशी पहलवानों की अनेक चित्रों से सुसज्जित जीवनियाँ, बारहवें में शुद्ध विनोदपूर्ण रसीले चुटकुले, तेरहवें में देश-देशान्तर का भौगोलिक वर्णन, चौदहवें में मनोहर सुसौबल और पहेलियाँ, पन्द्रहवें में सेवासमिति और स्कवाटिंग सम्बन्धी सुद्विबर्द्धक लेख, तथा सोलहवें में बालकों को सम्पादक की ओर से दी गई अमूल्य शिक्षाएँ रहती हैं। उक्त सभी विषयों के समावेश के साथ साथ इस बात का ध्यान रखा जाता है कि ऐसी एक बात भी न हो जिससे बालकों का वास्तविक हित न हो। यही कारण है कि सभी पत्रों और विद्वानों ने मुक्त कंठ से इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। यदि आप अपने बालकों का सच्चा कल्याण चाहते हैं, उनके जीवन को मंगल और आनन्द से भरपूर बनाना चाहते हैं, तो इस 'बालक' द्वारा उनके ज्ञान का खजाना भरिये।

छपाई की सुद्धता, स्वच्छता और सुन्दरता दर्शनीय ।
सम्पादनशैली सराहनीय ।।

सुन्दर-साहित्य-माला

१—पद्य-प्रसून

रचयिता—कवि सम्राट् प० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय
हिन्दी का सुप्रसिद्ध मासिक पत्र 'चौद' लिखता है—भिन्न भिन्न
विषयों पर लिखी हुई कविताओं का यह सुन्दर संग्रह है। कवितायें
सभी रसमयी हैं। शिक्षा के साथ साथ उनसे हृदय को अपूर्व
आनन्द और आनन्द भी प्राप्त होता है। उपाध्यायजी की मधुर
कविताओं का यह सुन्दर संग्रह हिन्दी-साहित्य का एक देदीप्यमान
रत्न है—इसमें सन्देह नहीं।

अखिल-भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की मासिक मुक्त
पत्रिका 'सम्मेलन पत्रिका' लिखती है—कविवर उपाध्यायजी के
रस पथों का यह एक सुन्दर संग्रह है। हिन्दी धसार को उपा
ध्यायजी की रचना पर अभिमान है। वह एक युग के कवि हैं।
उनकी सुन्दर कविताओं का इसमें सकलन किया गया है। प्रका
श करने वास्तव में प्रशंसनीय कार्य किया है। हम उन्हें बधाई देते हैं।
(संख्या लगभग ३००, सचिन, सजिल्द, मूल्य १॥)

२—दागो जिगर

लेखक—साहित्य भूषण धीरामनाथलाल 'सुमन'
भूमिका लेखक—उपन्यास-सम्राट् धीरुत प्रेमचन्दजी वी० ए०
प्रेमचन्दजी ने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है—इज्जत

जिगर की कविता उस वाटिका के समान है, जो सब प्रकार के फूलों से भरी हुई हो। 'सुमनजी' की टिप्पणियाँ 'जिगर' के कलाम के साथ सोने में सुगंध हो गई हैं। वह कवि भाग्यवान् है, जिसे कोई चतुर पारखी मिल जाय और इस लिहाज से हजारत जिगर अवश्य भाग्यशाली कवि हैं। आशा है, हिन्दी ससार इस पुस्तक का यथेष्ट आदर करेगा।

कवि की जीवनी के साथ साथ उसकी उत्तमोत्तम रचनाओं की तुलनात्मक आलोचना भी है। अन्त में कठिन फारसी शब्दों के हिन्दी-सरलार्थ भी दिये गये हैं।

पृष्ठ-संख्या लगभग २५०, सजिल्द, मूल्य १।)

३—निर्माल्य

रचयिता—कविरत्न प० मोहनलाल महतो 'वियोगी'

इस पुस्तक में 'छायावाद की भावमयी ललित कविताओं का सुसम्पादित संग्रह है। वियोगीजी छायावाद की कविता में कवान्द्र रवीन्द्र के अनुगामी हैं। आपकी कविता कितनी मधुर और कैसी चमत्कारपूर्ण होती है, यह हिन्दी ससार को भलीभाँति मालूम है। आप माधुरी-पदक प्राप्त कर चुके हैं। इस पुस्तक के विषय में अखिल भारतीय हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व सभापति सुसमालोचक प० जगन्नाथप्रसाद जी चतुर्वेदी लिखते हैं—निर्माल्य के निरीक्षण से सुरसिक्तों को सन्तोष हुए बिना न रहेगा। निरवयव पद्य-रचना-चातुर्य और माधुर्य के अतिरिक्त सुन्दर सूक्ष्म, कमनीय कल्पना, भव्य भाव, तथा नूतनत्व के निदर्शन का दर्शन स्थान स्थान पर हो जाता है।

पृष्ठ लगभग १५०, रेसमो जिल्द पर सोने के अक्षर । आयल
पेपर का आवरण । चमकीला तुकमार्क । सजावट अद्भुत डेट । मू० १)

४—महिला-महत्त्व

लेखक—यावू शिवपूजन सहाय

इस पुस्तक में ऐतिहासिक, सामाजिक और साहित्यिक दस
भन्नों कहानियों का दर्शनीय संग्रह है । यह एक ललित, प्रसाद
पूर्ण, भोजन्य, मनोरञ्जक और सर्वांगमुन्दर गद्य काव्य है । इसमें
वित्ताकर्षक वर्णनशैली, कवित्वमयी भाषा, अनल्प-कल्पनामयी रचना-
शैली, अजस्र भाव प्रवाह और मनोमुग्धकर सरसता का रसास्वादन
कर आप निश्चय ही अवाक् हो जायेंगे । सुन्दरालित्य, भाषासौष्टव,
वर्णन-चातुर्य, रस गाम्भीर्य, कल्पना कल्लोल और भाव सौकुमार्य
ऐसा अविरल है कि एक बार पढ़कर आप इस पुस्तक को छाती से
लगायें रहेंगे । कभी प्रेम की मस्ती में झूमने लगेंगे, कभी प्राचीन
राजपूती धारता के गर्व से फूल उठेंगे, कभी क्षेमल दान्त पदावली
की प्रफुल्लता पर लट्ठ की तरह थिरक उठेंगे । कई बार पढ़ने पर
भी सतोष न होगा । गद्य काव्य का सजीव चित्र है । पृष्ठ-३००,
आद्वितीय सुन्दर छपाई । सर्वांग सुसज्जित । मूल्य २)

५—कवि-रत्न 'मीर'

लेखक—साहित्य-भूषण श्रीरामनाथलाल 'सुमन'

भूमिका-लेखक—यावू शिवपूजन सहाय

'दागे त्रिगर' की तरह उर्दू के महाकवि 'मीर' पर सुमनजी ने
यह भी एक अतीव सुन्दर समालोचनात्मक ग्रन्थ लिखा है ।

न्होंने हिन्दी, उर्दू और संस्कृत के कवियों की कवितायें उद्धृत कर मीर' की रचना को ऐसी गवेषणापूर्ण तुलनात्मक समालोचना लिखी है कि सहृदयता बरबस मुग्ध हो-जाती है। 'दागे जिगर' की तरह हमें भी कवि की जीवनी और उसकी उत्कृष्ट रचनाओं का सम्पादित संप्रह है। साथ ही, 'कठिन' फारसी-शब्दों के सरलार्थ भी दिये गये हैं। पृष्ठ संख्या लगभग ३५०, सजिन्द, मूल्य १॥॥

६—बिहार का साहित्य

इस पुस्तक में बिहार-प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन के त्रिंशत् सभापतियों के भाषणों का सुसम्पादित सुन्दर संप्रह है। साथ ही, स्वागताध्यक्षों के भी भाषण संग्रहीत हैं। सभापतियों के नाम ये हैं—(१) हास्य-रसावतार प० जगन्नाथप्रसादजी चतुर्वेदी (२) हिन्दी के गद्य-कवि राजा राधिकारमणप्रसादसिंह एम० ए० (३) बिहार के वयोवृद्ध मुलेखक और कवि बाबू शिवनन्दन प्रधान (४) प्रोफेसर प० सकलनारायण शर्मा, काव्य व्याकरण-साख्यतीर्थ, विद्याभूषण (५) भारतेन्दु के समकालीन वयोवृद्ध साहित्यसेवा प० चन्द्रशेखरधरमिश्र। इस प्रकार इस एक ही पुस्तक में हास्यरस की सरस धारा, गद्यकाव्य का ललित प्रवाह, साहित्यिक विकास का गवेषणा-पूर्ण विवेचन, हिन्दीव्याकरण की गूढ़ातिगूढ़ बातों का विद्वत्तापूर्ण स्पष्टीकरण और साहित्यिक इतिहास का सूक्ष्म अन्वेषण संवलित है। इसको पढ़ कर आप बिहार के प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य का गौरव स्पष्ट देख सकते हैं। ज्ञानवृद्धि के साथ साथ मनोरंजन की भी अपूर्व सामग्री है। पृष्ठ संख्या ३००, पक्की

७—देहाती दुनिया

लेखक—बाबू शिवपूजन सहाय

इस उपन्यास में देहाती दृश्यों का ऐसा स्वाभाविक वर्णन है कि आप पढ़कर केवल चकित और पुलकित ही नहीं होंगे, बल्कि हँसते हँसते लोटपोट भी हो जायेंगे। सच पूछिये तो इसमें केवल मधुर और शुद्ध विनोद ही नहीं, अनेक उपदेश भी भरे पड़े हैं। भाषा ऐसी सरल, रसीली, रँगौली, लोचदार, फड़कती हुई, सजीव और सुबोध है कि इलवाहे और मजदूर भी खूब धबल्ले से पढ़कर बच्चों आसानी से समझ सकते हैं, और खूब मजा भी लूट सकते हैं। वर्णनशैली तो बड़ी ही हृदयप्राहिणी है और सजीव रचनाशैली भी एकदम निराले ढंग की है। बिल्कुल मुहावरेदार भाषा है। रोजमर्रा की बोलचाल की ऐसी सीधी सादी भाषा में ऐसा मनोरंजक और शिक्षाप्रद उपन्यास आज तक हिन्दी में नहीं निकला। मजाल क्या कि एक बार पढ़कर आप अपने दस मित्रों से इसे पढ़ने के लिये साम्प्रदायिक अनुरोध न करें। हम शक्तियाँ गारण्टी करते हैं कि यह मौलिक उपन्यास पढ़कर आप अवश्य ही मुग्ध हुए बिना न रहेंगे। विश्वास कीजिए, 'दे हाती दुनिया' की सैर करके आप निस्सन्देह अपने को कृतार्थ मानेंगे। पृष्ठ लगभग २००, सुनहले अक्षर से युक्त नये फैशन की रेशमी जिल्द, चमकीला रेशमी बुकमाक, आयल पेपर का चिकना आवरण, मूल्य १॥)

८—प्रेम-पथ

लेखक—पं० भगवतीप्रसाद धाजपेयी

यह उपन्यास क्या है, प्रेम की माधुरी का अवट खजाना है।

अगर एक बार हाथ में लेकर पढ़ना शुरू कीजिये, तो खाना पीना भूल कर इसे समाप्त किये बिना आप हर्गिज़ उठ नहीं सकते। एक एक पृष्ठ पढ़ कर आप पत्थर की मूर्त बन जायेंगे। तारीफ यह है कि आप इसे ज्यों ज्यों पढ़ते जायेंगे, तीव्र उत्कठा बढ़ती जायगी। इसमें एक सुन्दरी नवयुवती और एक शिक्षित नवयुवक का आदर्श प्रेम ऐसे शुद्ध एवं चटकीले रंग से चित्रित किया गया है कि कहीं कहीं अनायास मुक्तकण्ठ से धन्य धन्य कह उठना पड़ता है। विशुद्ध प्रेम कितना मधुर और कैसा आनन्ददायक होता है, उसकी चिन्तना और तर्कना में कितनी मधुरता और कैसी बिजली होती है, यह अगर देखना हो तो इसे जरूर पढ़िये। सब से बड़ी बात यह है कि इसमें पद-पद पर लौकिक शिक्षायें भरी हुई हैं। ऐसा सरस सामाजिक मौलिक उपन्यास अभी तक आप शायद ही पढ़ें होंगे।

पृष्ठ ३००, पक्की जिल्द, नये ढंग का आवरण, मूल्य २)

६—नवीन वीन

रचयिता—प्रोफेसर लाला भगवानदीन जी

इसमें कविवर दीनजी की चुनी हुई मीठी अनूठी कविताओं का परम रमणीय संग्रह है, जिनमें बाँस कवितायें सचित्र हैं। कुशल शब्द शिल्पी की रचना को चित्र शिल्पी की कुशलता ने ओर भी सजीव बना दिया है। कवितायें इतनी सरल और सरस हैं कि बालक भी उनमें मग्न हो जा सकते हैं। भाव तो ऐसे अनूठे हैं कि पढ़ कर तबियत फटक उठती है। उर्दू शैली ने कविता में और भी लोच पैदा कर दी है। कई कविताओं में अल्लाजी की ओज-

स्विनी लेखनी ने कमाल कर दिया है। अभी तक लालाजी की उत्तमोत्तम कविताओं का ऐसा सर्वाङ्गसुन्दर कोई सम्ग्रह नही निकला।

पृष्ठ संख्या लगभग १५०, बीस चित्र, सजिल्द, मूल्य २)

सुबोध-काव्यमाला

१—बिहारी-सतसई

सरल टीका सहित

[केवल छ महीने में प्रथम संस्करण बिक गया]

टीकाकार—प० रामवृक्ष शर्मा बेनीपुरी

आज तक बिहारी सतसई पर जितनी छोटी बड़ी टीकायें निकल चुकी हैं, उनमें सब से सरल, सस्ती और सुबोध बही है। यह नया संस्करण पहले से भी अधिक सुन्दर और परिवर्द्धित तथा परिष्कृत रूप में निकला है। दोहों का पाठ शुद्ध, उनका स्पष्ट अन्वय, सरल भाषा में भावार्थ, कठिन शब्दों के सुगम अर्थ, और नोटों में विशेष जानने योग्य बातों का उल्लेख है, जिससे विद्यार्थियों और कविता-रसिका के लिए इसकी उपयोगिता बहुत अधिक बढ़ गई है। थोड़ा पढ़ा लिखा आदमी भी बिहारी की रस-भरी रचना का पूरा मजा लूट सकता है। आरम्भ में बाबू शिवपूजन सहान-लेखित “सतसई का सौन्दर्य” शायक एक सरस सुखविपूर्ण निबन्ध है, जिसने सतसई की बारीकियों झलकाई गई हैं। सुन्दर कपड़े की तरह सजिल्द, पृष्ठ लगभग ४००, मूल्य तो भा ११) !

विद्यापति की पदावली

सचित्र और सटिप्पण

टीकाकार—प० रामबृक्ष शर्मा बेनीपुरी

भूमिका-लेखक—साहित्यरत्न, पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय

संस्कृत-साहित्य में जो स्थान जयदेव का है, हिन्दी-साहित्य वही स्थान विद्यापति का है। दोनों ही ने बड़ी सहृदयता से श्रीराव कृष्ण के मधुर प्रेम के मनोहर चित्र खींचे हैं, जिसकी अलौकिक शोभा देखते ही बनती है। दोनों ही को अपनी मधुर भाषा और कोमल कान्त-पदावली पर अभिमान था। विद्यापति के पद इतने मधुर हैं कि वह इसी लिए मैथिल कोकिल कहे जाते हैं। उपाध्यायजी ने इस सुन्दर सग्रह की भूमिका में लिखा है—“कैवल्य मैथिली भाषा को आपका गर्व नहीं है, बग-भाषा और हिन्दी-भाषा भी आपको अपनाने में अपना गौरव समझते हैं। तीन तीनों प्रान्त में समान भाव से समादृत होने का गुण यदि किसी की कविता में है, तो आप ही की कविता में। सग्रह-कर्ता ने उनकी उत्तमोत्तम रचना-कुसुमावली में से सरस से-सरस सुमन सचय करने में जिसे मधुर वृत्ति का परिचय दिया है, उसकी भूयसी प्रशंसा की जा सकती है। पाद-टिप्पणियों तो सोने में सुगंध हैं।”

पृष्ठ लगभग ४००, नव चित्र, सुन्दर रेशमी जिल्द पर सोने के अक्षर, रेशमी युक्तमार्क और चमकीला आवरण, मूल्य २)

नवयुवक-हृदय-हार

१—प्रेम

लेखक—नवयुवकाचार्य अश्विनी कुमार दत्त

यह अश्विनी बाबू—नैषे मामिक लेखक का चमत्कारपूर्ण लेखनी का अद्भुत कौशल प्रकट करनेवाली अनूठी पुस्तक है। इसके एक एक शब्द में वह बिजली है, जो नवयुवकों के जीवन में विलक्षण शक्ति स्फुरित कर सकती है। इसे पढ़कर नवयुवक निश्चय ही भ्रष्ट मार्ग से विमुक्त होकर सदाचारी और आदर्श प्रेमिक बन सकते हैं, जिस पर मानव-जीवन का सुख-सौभाग्य आश्रित है। पृष्ठ १००, मूल्य (₹), बड़ा सादगी, सफाई और सुन्दरता से छपा है। आरम्भ में अश्विनी बाबू की विस्तृत आदर्श जीवना दे दी गई है।

२—जयमाला

लेखक—उपन्यास-सम्राट् श्रीशरच्चन्द्र चट्टोपाध्याय

एशिया खण्ड के यशस्वी लेखकों में शरद बाबू का बड़ा ही प्रतिष्ठित स्थान है। यह पुस्तक उन्हीं के 'परिणीता' नामक सरल उपन्यास का सरल अनुवाद है। इसके अनुवादक हैं बिहार प्रादेशिक हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के प्रधान मंत्री बाबूरामधारोंप्रसाद विशारद। इसमें ऐसी विचित्र प्रेम कहानी है कि आप पढ़ कर तसलीर बन जायेंगे। मनुष्य के अन्तःकरण के कोमल भावों का ऐसा काव्यमय और आकर्षक चित्र अत्यन्त विरल है। कवर पर मूल लेखक का चित्र। शुद्ध सुन्दर स्वच्छ छपाई। मूल्य केवल छ आना। इससे सस्ता संस्करण हिन्दी में नितान्त दुर्लभ है।

३—विपंची

रचयिता—साहित्य भूषण श्रीरामनाथलाल 'सुमन'

इसमें सुमनजी की चुनी चुनाई उत्तमोत्तम कविताओं का संग्रह है। कविताएँ ऐसी मर्मभेदिनी हैं कि पढ़कर आँखें छलछला उठेंगी। छपाई सफाई बिलकुल अनूठी। मूल्य १)

४—कली

यह बिहार प्रान्त के चार प्रतिभाशाली नवयुवक कवियों की सुनिन्दा कविताओं का संग्रह है। इसमें ऐसी-ऐसी चुभीली रचनाएँ हैं कि पढ़कर आप बरबस कलेजा पकड़ लेंगे। छपाई सफाई दर्शनीय। मूल्य १)

बाल-मनोरंजन-माला

बगुला भगत

लेखक—प० रामकृष्णशर्मा वेनीपुरी ('बालक'—सम्पादक)

यह पुस्तक बालकों और बालिकाओं के लिये अत्यन्त पवित्र विनोदपूर्ण एवं शिक्षाप्रद है। बगुला भगत की कहानी ऐसी रोचक और उपदेशजनक है कि लड़के लड़कियाँ पढ़कर लोट-पोट हो जायेंगी और इसका प्रभाव उनके कोमल हृदय पर सदा के लिये अंकित हो जायगा। बगुला भगत की विकट माया और प्रपञ्च-भरी विचित्र लीला पढ़कर हँसी-पेच में ही लड़के लड़कियों की आँखों के सामने इस विलक्षण ससार का सच्चा चित्र घूम जायगा। एक बार लड़के पढ़ लें, तो निश्चय छाती से लगाये फिरे। एक तिरगा और कई सादे चित्र, सुसज्जित छपाई-सफाई, मूल्य १=)

सियार पॉडे

लेखक—प० रामवृक्षरामा वेनीपुरी ('बालक' सम्पादक)

यह पुस्तक तो बालक-बालिकाओं के लिये शुद्ध हँसी और खुद-मानी का सजाना ही है। वे पढ़ते-पढ़ते नाच उठेंगे, खाना पीना भूल कर इसी को पढ़ते रहेंगे। इसका कारण यह है कि इसमें केवल उनके मनबदलाव का ही सामान नहीं है, उनके ज्ञान को भी विकसित करनेवाला है—उनके दिल और दिमाग को चुटकियों में हरा-भरा कर देनेवाला अजीब नुस्खा है। इस एक हा जादू की प्रक्रिया से लड़के लड़कियों का मन धगा हो जायगा। एक तिरंगा और कई-सादे चित्रों से पुस्तक की शोभा ही अनूठी हो गई है। मूल्य १०)

महिला-मनोरंजन-माला

दुलहिन

लेखिका—भीमती चन्द्रमणि देवी

इस पुस्तक में नई बहुओं के लिये अमूल्य उपदेश भरे हुए हैं। जो बहुएँ अपने सगे से मिलग होकर एक ऐसे स्थान में सदा के लिये चली जाता हैं, जहाँ उनका परिचित कोई नहीं और जहाँ जाते ही अपने सगे से-सगे भा बिराने-से हो जाते हैं, उन्हीं अलहद और अनादी बहुओं के लिये यह पुस्तक खास तौर से लिखी गई है, ता कि वे इसे पढ़कर अपना ससुराल वालों के साथ यथोचित प्रेम और आदर का बर्ताव कर अपने परिवार को स्वर्ग और जीवन को सुखमय बना सकें। प्रत्येक कन्या के हाथ में यह शोभा पाने योग्य है। एक एक बात अनुभव से भरी है। भाषा बोलचाल की और बहुत ही

झाँठी है। मोटे अक्षरों में लाल-नीली स्याही में बड़ी सुन्दरता से छपी है। मूल्य १)

सावित्री

लेखिका—स्वर्गीया श्रीमती शिवकुमारी देवी

स्वर्गीया देवीजी बिहार के प्रसिद्ध हिन्दी लेखक अखौरी युगल किशोर मुन्सिफ की पुत्री और बिहार-प्रादेशिक हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के मंत्री बाबू रामधारी प्रसाद विशारद की अनुजबधू थीं। आप यह एक ही पुस्तक लिखकर अपना नाम अमर कर गई हैं। इसमें प्राचीन भारत की सुप्रसिद्ध सती सावित्री के पातिव्रत महिमा ऐसी सुन्दर भाषा में लिखी गई है कि एक बार पढ़ने से स्त्रियों की नस-नस में सतीत्व के गौरव की बिजली दौड़ जाता है। मजाल नहीं कि स्त्रियाँ इसे पढ़ने के बाद धृष्टा के साथ सीस पर न चढ़ा लें। यह भी दो रंगों में खूब सजावट के साथ निहायत नफीस छपी है। मूल्य १)

अदिल्या

लेखक—प० जटाधरप्रसाद शर्मा “विकल”

यह उस अदिल्या का चरित्र नहीं है, जो पौराणिक काल में अपयश की पिढारी बन चुकी है। यह तो उस वीर रमणी का पुण्य चरित्र है, जो भारत के इतिहास में अदिल्यागढ़ के नाम से काफी प्रसिद्ध हो चुकी है। इस देवी के चरित्र में यह स्पष्ट झलकता है कि स्त्रियों में कैसा अलौकिक शक्ति और प्रतिभा होती है तथा अपने चरित्र-बल से वे संसार में कितनी कीर्ति और प्रतिष्ठा स्थापित कर सकती हैं। भाषा अत्यंत सरल और सुबोध। छपाई-सफाई देखने ही योग्य। मूल्य १)

चारु-चरित-माला

(चार जाना सस्करण)

सभी जीवनियों सचित्र हैं । इनके आवरण-पृष्ठ हिन्दी सप्तर क
लिय सर्वथा अनूठे और अपूर्व हैं । देखते ही बनता है ।

शिवाजी

हिन्दू-राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी का वीर चरितावली
पढ़ने के लिए कौन न लालायित होगा । यह जीवनी आधुनिक ऐति
हासिक खोज के आधार पर लिखी गई है । पृष्ठ पृष्ठ से वारता टप
कती है । मुख-पृष्ठ पर शिवाजी की वार-मूर्ति देखने योग्य है ।
पृष्ठ संख्या ८०, मूल्य ।)

माइकेल मधुसूदनदत्त

बग भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि माइकेल मधुसूदन के जीवन की
कृष्ण-कहानी । मानव-जीवन की महानता और तुच्छता, उच्चता
और नीचता का अपूर्व चित्रण । यथाय होने पर भी औपन्यासिक
घटना का चमत्कारपूर्ण । ७० पृष्ठ । सचित्र । मूल्य ।)

विद्यापति

विद्यापति हिन्दी भाषा के जयदेव हैं । इनकी कविता जयदेव
की कविता के समान ही सरस है, मधुर है, कोमल है और सगीत
पूर्ण है । इसीलिए ये मैथिल-कोकिल कहलाते हैं । इन्हा की १६ प्रामा
णिक जीवनी है । पृष्ठ ४८, मूल्य ।)

बाबू लंगटासिंह

वर्तमान बिहार के विधाताओं में अन्यतम, नितान्त निर्धन व
मे जन्म लेकर अपने उद्योग से लखपती बन जाने वाले, मुजफ्फरपुर
के भूमिहार ब्राह्मण कालेज के प्रतिष्ठाता का साइस और उद्योगपूर्ण
जीवन-वृत्त । पृष्ठ ५०, मूल्य १)

शेरशाह

भारत के इतिहास का प्रसिद्ध सम्राट्, जो एक साधारण श्रेणी
का मनुष्य होने पर भी अपने बाहुबल और कौशल से दिल्ली का
बादशाह बन बैठा, तथा जिसने मुगल बादशाह हुमायूँ को हिन्दुस्तान
से खदेड़ मारा । पौरुष और बुद्धि के संयोग से अदना आदमी भा
कितनी उन्नति कर सकता है, यह देखना हो तो इसे जरूर
पढ़िये । मूल्य १)

गुरु गोविन्दसिंह

सिक्ख धर्म के दसवें गुरु की जीवना, जो एक महान् अद्भुत
घनुर्द्धर पुरुषसिंह, सिक्ख जाति का निर्माता, पंजाब का तेजस्वी
वीर, भारतवर्ष का एक चमकता हुआ सितारा, स्वतन्त्रता का एकान्त
पुजारी, आत्माभिमान का जबरदस्त पुतला था । पढ़कर आप
उठेंगे । मूल्य १)

हमारे यहाँ अन्य सभी प्रकाशकों की पुस्तकें मिलती हैं

हिन्दी-पुस्तक-भंडार, लहेरियासराय (

